CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,4NJA,1 0283
H6·2

(पदयाल)
ली/नं2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,4NJA.1
H6.2
0283

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन् ७६ में कर्णनाटक खेलने वाले पात्रों आग

९४-६४ कर्णनाटक खेलने वाले पात्रों ...

- श्रीकृष्ण — बालकराम शर्मा — उ. म. वि. ७

पाण्डेय मिश्र

- इन्द्र — रुक्म प्रसाद शर्मा — पनेरि (

प्रद्युम्न तिवारी

२ - परशुराम — वेदनिधि शर्मा — ब्रह्मचारी ...

- धृतराष्ट्र — सार्ङ्गशरण त्रिपाठी "

- कर्ण — उपाशा नारायण द्विवेदी, जयप्रकाश तिवारी

- युधिष्ठिर — दुण्डिराज रावाली देवेन्द्र पाठक

- भीम — गौरीशंकर — सुरेन्द्र मिश्र

- अर्जुन — राजेन्द्र द्विवेदी श्री शिवनारायण द्विवेदी

- दुर्योधन — मथुरा प्रसाद शुक्ल, प्रमोदकुमार तिवारी

- दुश्शासन — हरिशंकर चतुर्वेदी, कमलापति शर्मा

1 - शकुनि — शिवनारायण द्विवेदी देवनाथ शर्मा

२ - शल्य — सोमनाथ। शिवकुमार पाण्डेय

१३ - द्रौपदी — त्रिभुवन झा — रवीशंकर तिवारी

... सांगवेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक ... १४६ ...
दिनांक ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण

[पौराणिक नाटक]

२८१

लेखक

चतुर्भुज, एम० ए०

साधना मन्दिर
नयाटोला
पटना-४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक :
रामकुमार श्रीवास्तव
साधना मन्दिर
पटना—४

0152,2NCH,1
H6

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे
Price : Rs. 2/50

❁ मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❁
वाराणसी।
आगत क्रमांक......0279..........
दिनांक..........27/5..............
1446

सर्वाधिकार (C) प्रकाशकाधीन

मुद्रक :
वाल्मीकि प्रेस
पटना—४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो शब्द

महाभारत के एक प्रमुख पात्र 'कर्ण' का चरित्र बड़ा ही रहस्यमय रहा है। इस अभागे वीर ने कर्त्तव्य के नाम पर अपना सब कुछ दे डाला, अपनी जान तक दे दी, लेकिन वचन से विमुख न हुआ।

दुर्वासा ऋषि ने प्रसन्न होकर कुन्ती को कुछ मन्त्र बताये थे। कहा था कि वह जिस देवता की याद कर मन्त्र पढ़ेगी, उससे एक पुत्र मिलेगा। कुन्ती कुमारी थी। मन्त्र की परीक्षा लेने के लिए उसने सूर्य का आह्वान किया। सूर्य ने आकर अपने अंश से एक पुत्र होने का आशीर्वाद दिया। कुन्ती भयभीत हो गयी। ठीक समय पर कवच-कुन्डलधारी एक तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। कुन्ती ने उसे एक मंजूषा में बन्द कर नदी में डलवा दिया। मंजूषा अधिरथ सारथि के हाथ लगी। वह सन्तानहीन था। उसने बड़े प्यार से बच्चे का लालन-पालन किया। वही बालक 'कर्ण' हुआ। कर्ण महान् वीर था। लेकिन भाग्य बराबर उसे धोखा देता रहा। कर्ण के जन्म का रहस्योद्घाटन श्रीकृष्ण ने किया।

नाटक आठ दृश्यों में है। सिर्फ दो स्त्री-चरित्र हैं। इसका अभिनय, लेखक के निर्देशन में, हो चुका है। आशा है, लेखक के अन्य नाटकों की तरह 'कर्ण' भी सम्मान पायेगा।

- चतुर्भुज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण

पात्र-परिचय और अभिनय की प्रथम रजनी के कलाकार

पुरुष :

श्रीकृष्ण—	योगेश्वर; द्वारिकाधीश—	रामेश्वर प्रसाद
इन्द्र	देवराज—	भगवान प्र० श्रीवास्तव
परशुराम—	तपोवन के ऋषि—	कामेश्वर शर्मा
धृतराष्ट्र—	कौरवों के पिता—	हंसराज सिंह
कर्ण—	कुन्ती के परित्यक्त पुत्र	मुहम्मद युनुस
युधिष्ठिर-	कुन्ती के पुत्रगण पाण्डव	रामनारायण सिन्हा
भीम		जयनन्दन प्र० सिन्हा
अर्जुन		शशिनाथ त्रिवेदी
दुर्योधन-	धृतराष्ट्र के पुत्रगण; कौरव	भगवान प्रसाद
दुश्शासन-		ठाकुर इन्द्रदेव सिंह
शकुनी—	कौरवों के मामा—	चक्रधर
शल्य—	मद्रदेश के राजा—	अनन्त कुमार

स्त्री :

कुन्ती—	पाण्डव-जननी	कुमारी महेन्द्र कौर सूरि
द्रौपदी—	पाण्डवों की महारानी—	कुमारी हरवंश कौर सूरि

सर्वप्रथम 'मगध कलाकार', बख्तियारपुर (पटना) द्वारा श्री चतुर्भुज (लेखक) के निर्देशक में, जनवरी १९६१ ई० में, राजगृह में अभिनीत।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—मुनि परशुराम का आश्रम

(परशुराम और देवराज इन्द्र खड़े हैं। सामने मुनि का विख्यात फरसा टँगा है।)

परशु० : कौन हो तुम ?

इन्द्र : मैं देवराज इन्द्र हूँ। ऋषि परशुराम को मैं विनीत भाव से प्रणाम करता हूँ। (प्रणाम करना)

परशु० : कौन ? देवराज इन्द्र ? परशुराम आपका स्वागत करता है। मेरे इस तपोवन में आपके आने का कुछ विशेष कारण जान पड़ता है।

इन्द्र : ऋषि ने ठीक समझा है।

परशु० : तो फिर अपना अभिप्राय व्यक्त कीजिए।

इन्द्र : आपके आश्रम में जन्मजात कवच-कुंडलधारी दिव्य स्वरूप का एक युवक रणविद्या सीख रहा है।

परशु० : कवच-कुंडलधारी युवक ? आपने ठीक बताया। आज उसकी विद्या पूरी हो चुकी है। कल वह अपने घर लौट जायेगा। वह विद्याजिज्ञासु ब्रह्मतेज से दीप्त ब्राह्मणकुमार है। मैं उस पर बहुत ही प्रसन्न हूँ देवराज ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

इन्द्र : उस युवक ने जमदग्नि-पुत्र महाबली परशुराम को धोखा दिया है।

परशु० : धोखा ? नहीं देवराज, वह बड़ा ही सरल और नम्र है। उसके जन्मजात कवच और कुंडल उसके वंश का परिचय दे रहे हैं। धोखा देकर परशुराम से कुछ भी सीखना आसान नहीं है।

इन्द्र : उस युवक की मोहिनी आकृति ने सहस्रार्जुन-विजयी भृगुवंशीय महावीर परशुराम के हृदय पर जीत पा ली है। मैं उस अन्धकार को दूर करने के लिए आया हूँ जिसमें आप सब खो बैठे हैं। जिस युवक को धनुर्वेद सिखाने के लिए आप कड़ी धूप में, इस वृद्धावस्था में, मन-प्राण से संलग्न रहे, जिसके नम्र व्यवहार के आगे आपकी विश्वविख्यात क्रोधमुद्रा ठंढी हो गयी; जिसके तेज से आपका शत्रुजयी परशु भी शान्त हो गया, जानते हैं कि कौन है वह प्रपंची ?

परशु० : कौन है वह प्रपंची ?

इन्द्र : एक शूद्र।

परशु० : (सक्रोध) शूद्र ? देवराज ?

इन्द्र : आप तो स्वयं योगी हैं मुनिवर। योगबल में देखिये कि वह युवक सारथिपुत्र कर्ण है या नहीं ?

परशु० : (आँखें बन्द) देवराज, आप ठीक कहते हैं (आँखें खुलती हैं) मेरी आँखें बन्द थीं, अब खुल गयीं। कर्ण ने मेरी साधना नष्ट कर दी। जीवन में प्रथम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बार मैंने ऐसी भयानक भूल की है। मैंने युद्धविद्या में उसे अजेय बना दिया था। बार-बार क्षत्रियों के रक्त से पृथ्वी को रँगते-रँगते मैं थक गया था। मेरी प्रतिहिंसा सो गयी थी। लेकिन उस युवक को देखते ही मेरी सुप्त अभिलाषा फिर जाग पड़ी। मेरा निश्चय था कि उस युवक को अपने अधूरे काम की पूर्त्ति के लिए मैं पूर्णतः योग्य बना दूँगा। वही मैंने किया भी। दिन-रात एक करके इस युवक को रणविद्या की शिक्षा देने लगा। मैंने कोई विद्या उससे नहीं छिपायी—लेकिन आज मैं निर्वाक और निष्प्राण हो गया हूँ।

इन्द्र : मुनिवर, मुझे दुःख है कि प्रपंच से कर्ण ने आपकी विद्या का हरण किया है। उसका दंड-विधान होना चाहिये। जो व्यक्ति आपको ठग सकता है, वह संसार में सब कुछ कर सकता है।

परशु० : देवराज, इस शरीर की हड्डियाँ पुरानी हो गयी हैं, पर इसका रक्त पानी नहीं हुआ है। शाप देने की शक्ति अभी मुझमें मौजूद है। परशुराम की विद्या शूद्र के लिए नहीं है। परशुराम का शिष्य एक सारथि-पुत्र नहीं हो सकता—मैंने जिस पर आशाओं का ऐसा दृढ़ प्राचीर खड़ा किया था, वह पुरुष ऐसा विश्वासघातक निकलेगा, इसकी कल्पना भी मैंने नहीं की थी।

इन्द्र : सचहै मुनिवर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परशु० : इक्कीस बार इस श्यामला वसुन्धरा पर क्षत्रियों का रक्त बहाने वाला परशुराम आज फिर जाग पड़ा है। जिस परशुराम के नाम को सुनते ही वीर-प्रसविनी क्षत्राणियाँ भयकम्पित हो जाती हैं, जिसके फरसे की रक्तपिपासा जगत-प्रसिद्ध है; जिसने ईश्वरीय प्रेरणा के विरुद्ध असंख्य महावीर राजाओं के रक्तकुंड में बार-बार स्नान किया है, उस भृगुवंशीय को धोखा देना आसान नहीं है। कर्ण का दंड-विधान सामने है। (प्रस्थान)

इन्द्र : कर्ण और अर्जुन में घोर शत्रुता है। अर्जुन पर विजय पाने के लिए कर्ण ने ब्राह्मणवेश धारण करके परशुराम से रणविद्या सीखी है। अर्जुन का जन्म मेरे आशीर्वाद से हुआ है। मैं अर्जुन के लिए सब कुछ कर सकता हूँ। अब अवश्य ही कर्ण की साधना निष्फल होगी। कर्ण आ रहा है। इसे अभी परशुराम के आक्रोश का पता नहीं है।

(कर्ण का प्रवेश। ब्राह्मणवेश।)

इन्द्र : आ गये कर्ण? कहो; कब जाओगे?

कर्ण : कहाँ?

इन्द्र : हस्तिनापुर। तुम अधिरथ सारथि के पुत्र हो न?

कर्ण : आपका प्रयोजन?

इन्द्र : मेरा कोई प्रयोजन नहीं है। उत्तर देने के लिए तुम बाध्य भी नहीं हो।

कर्ण : मैं कल जाऊँगा।

इन्द्र : तुम्हारी विद्या पूरी हो गयी क्या?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : हाँ। आप कौन हैं?

इन्द्र : देवराज इन्द्र।

कर्ण : देवराज, मुझे क्षमा करें। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।
(प्रणाम करना। इन्द्र आशीर्वाद देते हैं।)

इन्द्र : अच्छा, अब मैं चला।

कर्ण : क्या गुरुदेव से भेंट नहीं करेंगे आप?

इन्द्र : भेंट कर चुका। मुझे अब अमरावती जाना है।
(प्रस्थान)

कर्ण : अमरावती? ऐसा जान पड़ता है कि देवराज के यहाँ आने में कोई रहस्य है····हे भगवान्, आज की रात अच्छी तरह कट जाये। कल ही तो मुझे जाना है। अब तक गुरुदेव यह जान नहीं पाये कि मैं कौन हूँ।

(परशुराम का आवेश में प्रवेश)

कर्ण : (आगे बढ़कर पैर छूने का भाव) गुरुदेव, शिष्य का प्रणाम स्वीकार हो।

परशु० : (पीछे हट कर) कौन है मेरा शिष्य?

कर्ण : मैं।

परशु० : कौन हो तुम?

कर्ण : एक ब्राह्मण स्नातक।

परशु : तुम झूठ बोलते हो। तुम ब्राह्मण नहीं हो, शूद्र हो, सारथिपुत्र हो, नीच हो।

कर्ण : (घुटने टेक कर आर्त्तवाणी में) गुरुदेव!

परशु० : फिर पूछता हूँ। बताओ, कौन हो तुम?

कर्ण : मैं सुतपुत्र कर्ण हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परशु० : नीच, तुम्हें लज्जा नहीं आती ? परशुराम को धोखा देने का साहस तुमने कैसे किया ? झूठ बोलते तुम्हारी जीभ क्यों नहीं गल गयी ? क्या तुम नहीं जानते थे कि परशुराम काल है ? क्या तुमने नहीं सुना था कि परशुराम ने अपने तेज फरसे से राजा कार्तवीर्य के हजार हाथों को मूली की भाँति काट डाला था ? बताओ, तुमने मुझे क्यों धोखा दिया ?

कर्ण : गुरुदेव, हस्तिनापुर की रंगभूमि में तृतीय पांडव अर्जुन ने मेरा अपमान किया। पांचाल-नरेश की कन्या द्रौपदी ने मेरी हँसी उड़ायी। युवराज दुर्योधन ने मुझे अंगदेश का राजा बनाया। मैंने अर्जुन को पराजित करने का संकल्प किया। हृदय में वीरता की भावना रखकर मैं आचार्य द्रोण के पास विद्या सीखने के लिए गया। लेकिन उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

परशु० : फिर क्या हुआ ?

कर्ण : उसी समय मैंने सुना कि भृगुवंशीय महाप्रतापी ब्राह्मण परशुराम महेन्द्रगिरि में निवास कर रहे हैं। मैंने सुना कि उसके परशु के तेज के सामने सारा देश विस्मय से सिर झुकाता है। मैंने यह भी सुना कि हस्तिनापुर के बालब्रह्मचारी वीरशिरोमणि पितामह भीष्म ने भी उन्हीं महापुरुष से रणविद्या सीखी है। अर्जुन को पराजित करने के लिए मुझे ऐसे ही गुरु से विद्या सीखनी थी। मैं यह भी जानता था कि आप शूद्रों को शिष्य नहीं बनाते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे वाध्य होकर मुझे ब्राह्मण स्नातक का वेश धारण करना पड़ा। मैंने सचमुच घोर अपराध किया है। आप मुझे दंड दें।

परशु० : दंड ?, कर्ण, तुम नहीं जानते। उस दिन सन्ध्या को नीललोहित गगन के नीचे जब मैं ईश्वरोपासना में लीन था, तब तुम सरल भाव में आकर मेरे सामने खड़े हो गये। मुझे जान पड़ा, मानो ईश्वर ने तुम्हें मेरे लिए भेजा हो। तुम्हारे कवचकुंडल-मय शरीर ने, ब्रह्मतेज से दीप्त चेहरे ने और मधु भाषण ने मुझे जीत लिया।

कर्ण : जानता हूँ, रात को जब मैं सोता था तो आप मेरे कानों में मन्त्र का ज्ञान देते थे।

परशु० : मेरे पास जो कुछ था, सब तुम्हें दे डाला। तुम मेरे सर्वस्व थे। तुम्हारे भरोसे मैंने एक बार फिर वीर-शोणितकुंड में स्नान करने का स्वप्न देखा था। मैं गुरुदक्षिणा माँगने वाला था यही लेकिन अचानक मेरी आशालता पर तुषारपात हो गया। तुम ब्राह्मणपुत्र नहीं, सूतपुत्र निकले।

कर्ण : गुरुदेव, मैं अपराधी हूँ। प्रतिशोध की भावना मुझमें बराबर प्रेरणा भर रही है। युवराज दुर्योधन की मैत्री मुझसे सहायता की भीख माँग रही है। मेरा और कोई उद्देश्य नहीं है। मैंने जमदग्नि-पुत्र परशु-राम को ठगा है। मुझे दंड दें गुरुदेव का कोई भी दंड भोगने के लिए कर्ण तैयार है।

परशु० : तैयार हो ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : लेकिन, गुरुदेव एक बात। आप ही बतायें शूद्र मनुष्य नहीं है क्या? शूद्र और ब्राह्मण में भगवान ने कौन-सा भेद किया है? क्या वीरता भी जात के आधार पर खरीदी जा सकती है? क्या यह मेरा दोष है कि मैं शूद्र हुआ हूँ?..

परशु० : कर्ण, ब्राह्मण ब्राह्मण है और शूद्र शूद्र। शूद्र का नीच संस्कार उसे ब्राह्मण के आसन पर कभी नहीं बैठा सकता। मेरी विद्या शूद्रों के लिए नहीं है। विवाद करने का अवकाश नहीं है।

कर्ण : गुरुदेव के सामने मैं नतमस्तक हूँ। मुझे दंड दें।

परशु० : मैं दंड-विधान कर चुका था कर्ण। पर इस कठोर हृदय पर अब भी तुम्हारे कवचकुंडल का प्रभाव है। मैं तुम्हें अपने अभिशाप से भस्म कर देना चाहता था। पर तुम्हें देख कर मेरा स्नेह फिर जाग उठा है'''अब तक तपस्या में न मालूम मैं कितना आगे बढ़ गया होता, पर मैं तुममें अपने को भूल बैठा। अभिशाप समझो या आशीर्वाद-मेरा हृदय एक ही बात कहता है कि जिस तरह तुमने मुझे जीवन भर के लिए दुःख दिया है, उसी तरह तुम भी दुःख पाओगे।

कर्ण : गुरुदेव!

परशु० : जीवन की अन्तिम घड़ी में तुम्हारे रथ का पहिया पृथ्वी में धंस जायेगा, उस समय तुम मेरी विद्या को भूल बैठोगे।

कर्ण : (आर्त्तवाणी) गुरुदेव! इस भयानक अभिशाप को वापस लीजिये। मुझे मरणदंड दीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परशु० : परशुराम का अभिशाप मिथ्या नहीं होता कर्ण। शीघ्र जाओ। हस्तिनापुर में अधिरथ तुम्हारी राह देख रहा है। जाओ।



द्वितीय दृश्य

स्थान—हस्तिनापुर की राजसभा

(सिंहासन पर सम्राट् दुर्योधन आसीन। आसपास धृतराष्ट्र, राज-परिवार के अन्य बड़े-बूढ़े तथा सामन्तगण। सामने शकुनि, पाण्डवगण और कौरवगण। जूआ हो रहा है। पाण्डवगण हार रहे हैं—इसलिए उदास हैं। कौरवगण जीत रहे हैं—इसलिए प्रसन्न हैं।)

दुर्योधन : मामा, देखते क्या हो ? डालो पासे।

शकुनि : जय भगवती। (पासे फेंकते हैं।)

कौरवगण : हाः हाः हाः !

दुर्योधन : खूब ! इस बार भी हमारी ही जीत रही। धर्मराज युधिष्ठिर के चारों भाई कुरुराज दुर्योधन के दास हुए। (अट्टहास)

दुश्शासन : धर्मराज, आप राजताज, धन-सम्पत्ति सब कुछ इस जूए में हार गये ! आपके चारों वीर भाई भी हस्तिनापुर के सम्राट् दुर्योधन के दास हो गये। अब क्या लगायेंगे आप दाव पर ?

भीम : यह जूआ नहीं, पाण्डवों को परस्त करने का षड्यन्त्र है। धर्मराज, बहुत हो चुका। जूआ खेलना बन्द कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : भीमसेन, धर्मराज तुम्हारे बड़े भाई हैं। उन्हें तुमसे अधिक बुद्धि है। वे राजनिमन्त्रण कभी नहीं ठुकरायेंगे। इसमें मेरा अपमान है।

भीम : अपमान? राजनिमन्त्रण? दुर्योधन, तुमने नीचता से पाण्डवों की सत्ता हरण करने की दुरभिसन्धि की है। हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठ कर, अपने भाइयों को जूआ खेलने का निमन्त्रण देकर, उन्हें धोखा देना तुम्हें शोभा नहीं देता।

दुर्योधन ; भीमसेन, मैं हस्तिनापुर का राजा हूँ। धर्मराज युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थ के राजा हैं! जूआ खेलना राजाओं का मनोविनोद है।

भीम : लेकिन जिस मनोविनोद से सर्वनाश हो, उससे दूर ही रहना उचित है। धर्मराज, मेरा आग्रह है कि आप जूआ खेलना बन्द करें और शीघ्र अपनी राजधानी में लौट चलें।

दुर्योधन : राजधानी? हाः हाः हाः! किसकी राजधानी? कैसी राजधानी? इन्द्रप्रस्थ को तो धर्मराज जूए में हार चुके। अब इन्द्रप्रस्थ पर मेरा अधिकार है।

युधि० : सच है भीम, मैं राजताज खो चुका हूँ। अपने भाइयों को भी जूए में हार चुका हूँ। अब जा भी कैसे सकता हूँ?

शकुनि : जय भगवती! धर्मराज, आप ठीक कहते हैं। राजताज और भाई को खोकर अब बाहर निकलना आपको शोभा नहीं देता। हार और जीत तो राजाओं के शृंगार हैं। देशों को जीतने में, राज्य की सीमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ाने में राजागण अपने शूरमाओं को रणभूमि में कटवा देते हैं। उनके लिए शोक नहीं करते। आपके भाई तो जीवित हैं। फिर खेल कर आप उन्हें पा भी सकते हैं; राजपाट वापस कर सकते हैं, चिन्ता को दूर कर सकते हैं।

दुर्योधन : मामा का कहना दुरुस्त है धर्मराज। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। खेल जारी रहे। मामा, फिर डालो पासे।

युधि० : अच्छी बात है। इस बार मुझे दाव पर समझो।

अर्जुन : ठहरो शकुनि; पासे मत डालो। धर्मराज, जूए के नशे में आप उचित-अनुचित सब कुछ भूल रहे हैं। खेल बन्द कीजिए। सर्वनाश न होने दीजिये। हम चार भाई कुरुराज दुर्योधन के दास बन कर रहेंगे, पर आप अपने को दाव पर न लगाइये।

दुर्योधन : गाण्डीवधारी अर्जुन, धर्मराज के स्नेह को न ठुकराओ। जूआ होने दो। 'सम्भव है, धर्मराज के पुण्य-प्रताप से तुम सब दासत्व-शृंखला से मुक्त हो जाओ। मामा, धर्मराज का अनुरोध न ठुकराओ। डालो पासे।

शकुनि : नहीं, मैं पासे न डालूँगा। मुझे धर्मराज की अनुमति चाहिये।

धर्मराज : डालो पासे शकुनि।

शकुनि : (खूब प्रसन्न) जय भगवती ! (पासे डालना। अट्टहास।) धर्मराज अपने को भी हार गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : उत्तम ! हाः हाः हाः ! इन्द्रप्रस्थ-नरेश धर्मराज युधिष्ठिर आज कौरवों के दास हुए। आश्चर्य ! धर्मराज, मेरा कोई दोष नहीं।

भीम : सर्वनाश !

दुर्योधन : क्यों भीम, क्या हाल है ? आज मौन क्यों हो ? धर्मराज भी तो हस्तिनापुर के सम्राट् दुर्योधन के दास हो गये।

भीम : जिह्वा पर लगाम दो दुर्योधन।

दुर्योधन : सावधान भीम ! दुर्योधन सम्राट् है और तुम मेरे दास हो। मेरा नाम लेकर पुकारने का साहस न करो।

भीम : भीम का साहस तुम भूल गये क्या ? बचपन में भीम ने बार-बार तुम्हें द्वन्द्वयुद्ध में पराजित किया था। उन घटनाओं का स्मरण करो। तुम नहीं जानते कि भीम उस फौलाद से बना है, जिसे तुम जैसे कायर झुका नहीं सकते।

दुर्योधन : अपनी प्रशंसा अपने मुख से करके तुम अपनी दासता के आवरण को दूर नहीं कर सकते भीम।

भीम : मैं धर्मराज के कारण शान्त हूँ। नहीं तो सच कहता हूँ कि अभी इसी सभा में, समस्त कौरवकुल का नाश करके इस जूए की चाल को बदल दूँ। बेईमान शकुनि जूए के फन में तेज है। धर्मराज की सरलता के कारण वह हमलोगों को इस सभा में लूट रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर : भीम, शान्त होओ। विपत्तियों की जड़ मैं हूँ। मेरे ही कारण पाण्डव-कुल पर ऐसा संकट आया है। दण्ड मुझे दो।

भीम : धर्मराज, इसी का तो दुःख है कि हम आपको दंडित नहीं कर सकते। यदि बड़े भाई के प्रति हममें इतनी श्रद्धा नहीं होती तो शायद आप हमें दाव पर लगाते भी नहीं।

धृतराष्ट्र : बेटा दुर्योधन, जूआ नाश का मूल है। खेल बन्द करो। हारे हुए पाण्डवों को अपमानित न करो।

दुर्योधन : अपमान? पिताजी, आपको क्या पता है कि मुझे इनलोगों ने कई बार और किस रूप में अपमानित किया है! मैंने तो अब तक प्रतिशोध लिया ही नहीं। यह तो एक प्रमोद था जो पाण्डवों को मँहगा पड़ा।

धृतराष्ट्र : कुरुकुल के हित के लिए जूए का खेलना बन्द करो। सम्भव है, इस जूए के पीछे भारी गृहकलह हो।

दुर्योधन : आप चिन्ता न करें पिताजी! खेल में अभी ही तो आनन्द आ रहा है। धर्मराज रोज थोड़े ही खेलने के लिए आयेंगे।

शकुनि : सम्राट दुर्योधन, धर्मराज सब कुछ खो बैठे।

दुर्योधन : नहीं, धर्मराज सब कुछ खोकर भी वापस पा सकते हैं। अभी उनके पास एक बहुमूल्य निधि बची हुई है।

शकुनि : कौन-सी है वह निधि?

दुर्योधन : पांचाली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीम : द्रौपदी ? दुर्योधन, क्या तुम अपने वंश की मान-मर्यादा नष्ट ही कर देने पर तुले हो ? तुम्हें सती द्रौपदी को दाव पर माँगते लज्जा नहीं आती ?

दुर्योधन : कैसी लज्जा ? तुम सब हारे हुए हो। द्रौपदी को दाव पर रखकर धर्मराज एक ही बार में अपना समस्त राजपाट, भाई, सम्पत्ति आदि वापस ले सकते हैं। सौदा बुरा नहीं है। धर्मराज अच्छी तरह सोच लें।

अर्जुन : धिक्कार है ऐसी राय पर ! शर्म है इस लज्जाजनक आचरण पर ! यह राज सभा है या जूआघर ? दुर्योधन, माना कि तुम जूए में जीत गये; लेकिन जीत ने क्या तुम्हारा विवेक भी नष्ट कर दिया ? तुम्हारे पूज्य पिता तथा वन्दनीय सम्बन्धी इस सभा में हैं। ऐसा प्रस्ताव रखते तुम्हारी जीभ नहीं गल गयी ?

दुर्योधन : अर्जुन, जानता हूँ कि पांचाल देश के स्वयंवर में द्रौपदी ने वरमाला तुम्हारे गले में पहनायी थी। लेकिन अब तो कुशल इसी में है कि वह चाहे तो तुम्हारे साथ दासता स्वीकार करे या यदि तुम जीत जाओ तो एक ही बार में सब कुछ वापस ले लो।

अर्जुन : मैं नहीं जानता था कि इस कुरुसभा में हमलोगों के साथ ऐसा कुचक्र रचा जायगा। पता नहीं, क्यों धर्मराज ने ऐसे भीषण आयोजन में भाग लिया। धर्मराज, मेरा अनुरोध है कि पांचाली को दाव पर न लगायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर : गाण्डीवधारी अर्जुन मेरी बुद्धि काम नहीं करती।

भीम : द्रौपदी को दाव पर लगाने की मूर्खता न करें धर्म-राज। कुलनारी की प्रतिष्ठा को जूए पर न लगायें।

शकुनि : धर्मराज, यह अन्तिम दाव है। मुझपर विश्वास कीजिए। जीत आपकी होगी। द्रौपदी को दाव पर रख कर क्षणमात्र में आपलोग दासता के बन्धन से छूट सकते हैं, अपनी खोई हुई मर्यादा को वापस कर सकते हैं।

अर्जुन : शकुनि धोखेबाज है। शकुनि की बातों का विश्वास न करें।

भीम : शकुनि इस जूए के नाटक का सूत्रधार है। इसने पासों पर मन्त्र डाल दिया है। हमलोगों की जीत कभी नहीं होगी।

दुर्योधन : जूए का आयोजन मैंने किया है, मामा शकुनि ने नहीं। धर्मराज, पराजय स्वीकार करना आपको शोभा नहीं देता। एक दाव और।

अर्जुन : दुर्योधन, क्षत्रियों की हार-जीत जूए से नहीं मानी जाती। युद्ध करके देखलो कि जीत किसकी होती है।

दुर्योधन : तलवार और तीर की क्या आवश्यकता यदि हार-जीत का निर्णय जूए से ही हो जाये? धर्मराज, सोच न करें। मामा शकुनि को पासे डालने की अनुमति दें।

युधिष्ठिर : तो वही हो। द्रौपदी दाव पर है। डालो पासे शकुनि।

शकुनि : जय भगवती! (पासे डालना। अट्टहास।) द्रौपदी भी कुरुराज दुर्योधन की दासी हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : द्रुपद की कन्या मेरी दासी ? (गाण्डीवधारी अर्जुन की प्रियतमा द्रौपदी मेरी दासी ? हाः हाः हाः !) मामा शकुनि तुमने मेरी चिरपोषित अभिलाषा पूरी कर दी। रूपगर्विता पांचाली अब हस्तिनापुर के महल में झाड़ू फेरेगी। हाः हाः हाः।

(सभी पाण्डव नतमस्तक और शोकमग्न हैं।)

दुर्योधन : भाई दुश्शासन !

दुश्शासन : आज्ञा सम्राट् !

दुर्योधन : अभी, इसी क्षण, द्रौपदी को मेरी सभा में उपस्थित करो।

दुश्शासन : जो आज्ञा महाराज ! (प्रस्थान करने को उद्यत)

भीम : ठहरो दुश्शासन। पाण्डव जूए में हार गये हैं अवश्य, लेकिन उनका रक्त ठण्डा नहीं हुआ है, भीम की गदा नष्ट नहीं हुई है, अर्जुन का गांडीव टूटा नहीं है।

दुर्योधन : दुश्शासन, भीम हमारा दास है। उसकी बातों पर ध्यान न दो। पांचाली को अविलम्ब खींच लाओ।

(दुश्शासन का प्रस्थान)

दुर्योधन : क्यों अर्जुन, गांडीव धनुष किस दिन काम आयेगा ? देखता हूँ कि तुम्हारे गांडीव से अधिक बल मामा शकुनि के पासों में है। क्यों मामा ?

शकुनि : मैं गान्धार देश यही विद्या तो सीखने गया था। जूए के पासे तो मेरे खरीदे गुलाम हैं। वे मेरे विरुद्ध जा ही नहीं सकते। भीम की गदा का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार चूक सकता है, पर शकुनि के पासे का वार कभी नहीं चूक सकता। भगवती मेरे साथ हैं। मैं जूए की विद्या से समस्त भूमंडल का राज्य तुम्हें दिला सकता हूँ सम्राट्।

दुर्योधन : शावाश मामा ! तुम मेरे राज्य के एक बहुमूल्य रत्न हो।

भीम : दुर्योधन, शकुनीरूपी रत्न को संयोग कर रखने का क्या परिणाम होता है, यह तुम्हें बाद में मालूम होगा।

दुर्योधन : क्या परिणाम होगा—जरा अपने भाई के मुख से सुनूँ तो।

भीम : शकुनी ने जिस गृहकलह की आग को आज भरी सभा में प्रज्जवलित किया है, उसमें सारा कुरुकुल जलकर भस्म हो जायेगा।

शकुनी : हरे ! हरे ! सम्राट् ! भरी सभा में अपने मामा का ऐसा अपमान न कराओ। भगवती सब कुछ सुन रही हैं। वह तुम पर रुष्ट हो जायेंगी।

भीम : तुम भगवती के उपासक कब से हो गये कपटी मित्र ?) भगवती का भय दिखाकर तुम दुर्योधन, दुश्शासन आदि दुष्टों को प्रभावित कर सकते हो। (भीम और अर्जुन तुम्हारी शैतानी को पहले से जानते हैं।)

दुर्योधन : विवाद बन्द करो। सम्राट् दुर्योधन किसी की लाल-लाल आँखें देखने का आदी नहीं है। मामा, देखते जाओ कि शत्रु कैसे पस्त होता है।

(दुश्शासन का प्रवेश)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : कौन ? दुश्शासन ? द्रौपदी कहाँ है ? तुम अकेले क्यों आये ? शीघ्र उत्तर दो ।

दुश्शासन : सम्राट्, द्रौपदी कहती है कि मैं एक वस्त्रवाली हूँ, सभा में नहीं जा सकती ।

दुर्योधन : उसकी प्रार्थना व्यर्थ है । उसे सभा में आना ही होगा । उसे खींच लाओ दुश्शासन ।

भीम : सावधान दुश्शासन ! पांचाली के प्रति किये गये अपमान को हम नहीं सह सकते । (धृतराष्ट्र से) चाचाजी, आप तो दुर्योधन के पिता हैं । क्या कुलनारी का यह अपमान आपको अच्छा लगता है ? आप दुर्योधन को रोकते क्यों नहीं ? (दुश्शासन का प्रस्थान)

धृतराष्ट्र : बेटा दुर्योधन, कुलनारी का अपमान मत करो । द्रौपदी को राजसभा में मत बुलाओ ।

दुर्योधन : कुलनारी ? कौन है कुलनारी ? द्रौपदी ? जिस नारी का एक पति होता है, वही सम्मान के योग्य है । द्रौपदी के पाँच पति हैं । इससे वह एक वेश्या के समान है !

भीम : (सक्रोध) दुर्योधन, सावधान ! सँभालो मेरा प्रहार । (गदा उठाते हैं ।)

युधिष्ठिर : भीमसेन, क्रोध न करो । शान्त होओ ।

अर्जुन : शान्ति ? अब शान्ति कहाँ ? मेरा गांडीव भी टंकार करने को बेचैन है । यदि बड़े भाई की रोक न होती तो यह सभाभूमि रणांगन में बदल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती ; पासे के स्थान पर खून की होली खेली जाती।

दुर्योधन : इन क्लीव भाइयों का नाटक देखने में बड़ा ही सुन्दर लगता है। क्यों मामा ?

अर्जुन : कौन है क्लीव ?

दुर्योधन : इसका उत्तर सभा देगी।

(इसी समय द्रोपदी के केश को पकड़े दुश्शासन का प्रवेश। द्रोपदी की दशा अस्त-व्यस्त है। वह रो रही है। आते ही पृथ्वी पर गिरती है।)

दुर्योधन : भाई दुश्शासन ! तुम पर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। हस्तिनापुर के सम्राट् को अपने ऐसे आज्ञाकारी भाई पर गर्व है।

(दुश्शासन नतमस्तक)

दुर्योधन : पांचाली, तुम्हारी इस दशा का उत्तरदायित्व तुम्हारे पतियों पर है। जूए में धर्मराज राज-ताज, धन-सम्पत्ति तथा भाई समेत अपने को भी हार बैठे। फिर तुम्हारी बारी आई ! वे तुमको भी गँवा बैठे।

द्रोपदी : (रोते हुए) जब धर्मराज अपने को हार बैठे तो मुझे दाव पर रखने का उन्हें क्या अधिकार था ?

दुर्योधन : क्या तुम धर्मराज की पत्नी नहीं हो ?

द्रोपदी : अवश्य हूँ। पर स्वयंवर में वरमाला मैंने धर्मराज के तीसरे भाई के गले में पहनायी है। उन्हीं गांडवधारी का मुझ पर असली अधिकार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मराज का कोई अधिकार नहीं था कि पराई वस्तु को दाव पर लगाते।

धृतराष्ट्र : पांचाली ठीक कहती है। हारे हुए धर्मराज को कोई अधिकार नहीं था कि अर्जुन की पत्नी को दाव पर लगाते।

दुर्योधन : इस विवाद का कोई अर्थ नहीं है। सिद्ध है कि पांडव मेरे दास और द्रौपदी मेरी दासी है। दुश्शासन, दासी को नंगी कर डालो।

धृतराष्ट्र : दुर्योधन, यह नीचता है।

भीम : धर्मराज, अब मुझसे नहीं सहा जाता।

युधिष्ठिर : शांत भीम, शान्त।

द्रौपदी : (रोकर) नहीं, नहीं कुरुराज, ऐसा न करो। मैं तुम्हारी दासी बनकर रहने को तैयार हूँ। पर मुझे वस्त्रहीन न करो।

दुर्योधन : द्रुपद-कन्या, भूल गयी अपने व्यंगमिश्रित उस अट्टहास को जो इन्द्रप्रस्थ में मेरे अपमान के लिए गूँज उठा था? मय दानव ने इन्द्रप्रस्थ के महल जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल तथा दीवार के स्थान पर द्वार और द्वार के स्थान पर दीवार की रचना की थी। फलस्वरूप मेरे घुटने टूट गये, सिर फूट गये। तुमने आकाश में गूँजती हुई हँसी मुझे सुनाकर कहा था कि अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं। मैं उस अपमान को भूला नहीं हूँ। यह उसी का प्रतिशोध है। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रप्रस्थ की महारानी द्रौपदी को नंगी देखना चाहता हूँ।

(कर्ण का प्रवेश)

दुर्योधन : कौन ? अंगराज कर्ण ? तुम ठीक समय पर आये।

कर्ण : सम्राट्, इस सभा में जो कुछ हो चुका, उससे मेरा कोई मतलब नहीं है। लेकिन जब द्रौपदी के रुदन का स्वर मेरे कानों में पहुँचा तो मैं अपने को रोक न सका, तत्काल चला आया।

द्रौपदी : अंगराज ! मेरी लाज लुटी जा रही है। मेरी रक्षा करो।

कर्ण : कौन है अंगराज द्रौपदी ?

द्रौपदी : तुम हो अंगराज। तुम वीर हो मेरी रक्षा करो।

कर्ण : तुम भूलती हो। मैं अंगराज कर्ण नहीं, सूतपुत्र कर्ण हूँ। याद है पांचाल-देश के अपने स्वयंवर का वह दृश्य जब मैं मत्स्यचक्षु-भेद करने के लिए खड़ा हुआ था, तो तुमने चुभती हुई वाणी में कहा कि मैं सूतपुत्र को नही वरूँगी। क्या तुम उस कठोर सत्य को अपने नयन के नीर से धो सकती हो ? क्या उस समय तुम भूल गयी थी कि मैं अंगराज कर्ण हूँ।

द्रौपदी : मुझे क्षमा करो अंगराज। नारी की लाज बचाओ।

कर्ण : गर्विता नारी, में वीरत्व या शौर्य में अर्जुन से कम नहीं हूँ। तुमने जानबूझ कर मेरा तिरस्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया और अर्जुन को अपनाया। अपने को तुमने ऐसे क्लीव के चरणों में डाल दिया कि तुम्हें एक के बदले पाँच पति मिले—पाँच। आज अपने पतियों के सामने ही तुम रो रही हो, और वे चुपचाप हैं। भाग्यहीना सुन्दरी, रोओ अपने विगत कर्मों पर। जी भर रोओ। सम्राट् मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

दुर्योधन : दुश्शासन, द्रौपदी को वस्त्रहीन कर डालो।

धृतराष्ट्र : यह अनुचित है बेटा।

दुर्योधन : दुर्योधन के पास दया नहीं है पिताजी। मैं अपने अपमान का प्रतिशोध ले रहा हूँ। दुश्शासन !

दुश्शासन : सम्राट, मेरे हाथ काँपते हैं।

दुर्योधन : कायर न बनो दुश्शासन। आगे बढ़ो। तुम पांडवों से डरते हो ? पांडव तेजहीन हो गये हैं। (उनसे डरना बेकार है। द्रौपदी के आँसू की पर्वाह न करो।)

द्रौपदी : कुरुराज, गगन में भगवान भास्कर तुम्हारे इस अमानुषिक कार्य को देख कर स्तब्ध हैं। माँ वसुधन्‍रे, प्रलयंकारी नाद से तू दो टूक हो जा; अपने अंक में मुझे ले ले।

दुर्योधन : दुश्शासन, मैं एक उन्मान्दिनी का प्रलाप सुनना नहीं चाहता। आगे बढ़ो।

दुश्शासन : सम्राट् मुझे क्षमा करें।

दुर्योधन : कुरुराज का भाई कायर नहीं हो सकता। राजाज्ञा है दुश्शासन, पांचाली को वस्त्रहीन करो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रौपदी : (रोती हुई) क्या इस सभा में कोई ऐसा नहीं है जो एक अबला की पुकार सुन सके ? क्या द्रोणाचार्य और कृपाचार्य की तलवारों पर काई जमी है ? क्या पिता और पितामह की जीभ गल गयी है ? क्या विदुर जी की नीति सो गयी है ? क्या अश्वत्थामा के धनुर्बाण नष्ट हो गये हैं ? क्या भीम का बाहुबल नष्ट हो गया है ? क्या धनंजय की वीरता सो गयी है ? क्या सारी सभा अन्धी और बहरी है ?

युधिष्ठिर : पांचाली कोई अंधा या बहरा नहीं है। कुछ लोगों को तो दुर्योधन के नमक ने पराभूत कर रखा है। पाण्डवगण अपने को हार चुके हैं। इसी से हम सब चुप हैं।

दुर्योधन : दुश्शासन, आज्ञा-पालन में विलम्ब हो रहा है। याद रखो, राजदंड अपने भाई को भी नहीं छोड़ता। क्या तुम अपना अपमान भूल गये ? इन पांडवों ने और इन गर्विता सुन्दरी ने पगपग पर कौरवों की हँसी उड़ायी है। आज ही हम इनसे प्रतिशोध लेंगे। आगे बढ़ो।

दुश्शासन : सम्राट्र सती की ओर मेरे पैर ही नहीं बढ़ते।

दुर्योधन : द्रौपदी कब से सती हुई ? दुश्शासन, आगे बढ़ो, अन्यथा मुझे स्वयं द्रौपदी को वस्त्रहीन करने के लिए सिंहासन से नीचे उतरना पड़ेगा।

द्रौपदी : हे मुरारी ! सर्वज्ञानी ! क्या एक नारी की प्रार्थना सुनने का तुम्हारे पास भी समय नहीं है ? क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें भी दुर्योधन के नमक ने जीत लिया है ? (प्रणतपाल श्री कृष्ण ! तुम्हारी उपासिका आज घोर कष्ट में है। रक्षा करो योगेश्वर !)

दुर्योधन : पांचाली, तुम्हारी योगेश्वर सोये हैं। उन्हें भूल जाओ।

द्रौपदी : हाँ कुरुराज, मेरी लाज बचाओ।

दुर्योधन : एक ही रास्ता है। तुम पाण्डवों को छोड़कर कुरुराज दुर्योधन की अर्द्धांगिनी बनो। दुर्योधन की बाईं जाँघ पर बैठ कर उसको हृदय से आलिंगन करो। बोलो, स्वीकार है ?

द्रौपदी : नहीं, नहीं, हजार बार नहीं।

भीम : पापी दुर्योधन; तुम्हारी जाँघ पर द्रौपद्री नहीं, मेरी गदा बैठेगी ! तुम्हारे कलेजे से द्रौपद्री नहीं, मेरी मुष्टिका आलिंगन करेगी। यदि रणभूमि में तुम्हारा खून न पीयूँ और तुम्हारे खून से पांचाली की केशराशि तर न करूँ तो मैं पान्डुपुत्र नहीं, मेरा भीमसेन नाम नहीं।—और दुश्शासन, तुमने उस पांचाली के केश को खींचा है जो यज्ञ के पवित्र मन्त्रों द्वारा इस पृथ्वी पर आयी है। संग्रामभूमि में मैं तुम्हारा गरम-गरम रक्त चुल्लू में भर कर पीऊँगा। यदि मैं इन प्रतिज्ञाओं की पूर्त्ति न करूँ तो हिजड़ों के हाथों मरुँ और मरने पर भी उत्ताम योनि न पाऊँ।

दुर्योधन : कोई चिन्ता नहीं भीम। रणभूमि में हम तुम्हें अवश्य मौका देंगे। दुर्योधन तुम्हारी ललकार को स्वीकार करता है। दुर्योधन गदा-युद्ध में किसी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछे नहीं हटता । दुश्शासन, अब विलम्ब न करो । द्रौपद्री को वस्त्रहीन करो ।

[दुश्शासन द्रौपदी को वस्त्रहीन करना चाहते हैं। चीर का अन्त नहीं होता है थककर दुश्शासन गिरते हैं। अचानक जोरों का शब्द। अन्धकार। बिजली की चमक में कृष्ण-दर्शन। दुश्शासन फिर चीर खींचते हैं। धृतराष्ट्र चिल्ला पड़ते हैं।]

धृतराष्ट्र : दुश्शासन, चीर खींचना बन्द करो।

(दुश्शासन चीर खींचना बन्द कर देते हैं। प्रकाश।)

धृतराष्ट्र : दुर्योधन, तुमने सती का अपमान किया है। दुश्शासन द्रौपदी को वस्त्रहीन न कर सका। कारण, द्रौपदी सती नारी है। जिस सिंहासन पर आज तुम बैठे हो, वह मेरी कृपा का दान है। मैं ऐसा अन्याय सहन नहीं कर सकता। बेटी द्रौपदी, तुम दुर्योधन और दुश्शासन को क्षमा करो। यह बूढ़े धृतराष्ट्र की प्रार्थना है। मैं तुम पर बहुत ही प्रसन्न हूँ। वर माँगो पांचाली। वर मांगो

द्रौपदी : पिताजी, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो पाण्डवों को और मुझे दासता के बन्धन से मुक्त कीजिये, साथ ही राजपाट, धनसम्पत्ति वापस कीजिये।

धृतराष्ट्र : वही होगा पांचाली। तुम और तुम्हारे पति मुक्त हैं हारी हुई समस्त चीजें उन्हें वापस मिलीं। अब वे अपनी पूर्व प्रतिष्ठा के साथ इन्द्रप्रस्थ को लौट जायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : यह कभी नहीं होगा पिता जी। हम आपके दिये गये वर की रक्षा नहीं कर सकते। इतना बड़ा आयोजन बेकार नहीं जा सकता।

धृतराष्ट्र : यदि तुम मेरे वचनों की रक्षा नहीं कर सकते, यदि तुम अपने कुल की प्रतिष्ठा नष्ट करना चाहते हो तो हस्तिनापुर का सिंहासन मुझे वापस करो। सिंहासन मेरे जीते जी मेरा ही रहेगा, तुम जैसे दुष्ट के हाथ में न पड़ेगा।

दुर्योधन : अच्छी बात है। दुर्योधन अपने पिता का मान भंग न करेगा। द्रौपदी को जो वर आपने दिये हैं, मैं उन्हें मानता हूँ द्रौपदी तथा पाण्डवगण दासता के बन्धन से मुक्त हुए। धर्मराज को राज वापस मिला धर्मराज आप इन्द्रप्रस्थ लौटने की तैयारी करें।

युधिष्ठिर : महाराज धृतराष्ट्र की जय !

(धृतराष्ट्र, शकुनि, दुर्योधन और दुश्शासन के सिवा सबका प्रस्थान)

दुर्योधन : पिता, जी, अब मैंने भी अपना मार्ग ठीक कर लिया है। आपका आदेश चाहिये।

धृतराष्ट्र : कैसा मार्ग ?

दुर्योधन : इस सिंहासन को वापस लीजिये। मैं इसके योग्य नहीं हूँ। मुझे आज ही तपस्या करने के लिए वन में जाना है।

धृतराष्ट्र : तुम तस्पया क्यों करना चाहते हो दुर्योधन ?

दुर्योधन : आपको समझाने से कोई लाभ नहीं। आप इस सिंहासन पर स्वयं बैठिये या इसे धर्मराज को दे डालिये। मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतराष्ट्र : आखिर क्यों ?

दुर्योधन : मैं हज़ार बार चुका हूँ कि पाण्डव मुझसे जलते हैं, वे हस्तिनापुर के सिंहासन को हस्तगत करना चाहते हैं। इन्द्रप्रस्थ का वह राजसूय यज्ञ मुझे धोखा देने का एक बहाना था। अकारण ही मेरे प्रिय मित्र चेदिराज शिशुपाल का उस यज्ञ में कृष्ण ने वध कर डाला। वहाँ पग-पग पर मेरी हँसी उड़ायी गयी। क्यों मामा ?

शकुनि : दुर्योधन झूठ नहीं बोलता महाराज। मैं भी तो उस यज्ञ में उपस्थित था। वहाँ तो आपकी भी हँसी उड़ायी गयी थी।

धृतराष्ट्र : फिर तुम लोग चाहते क्या हो ?

शकुनि : बनवास।

धृतराष्ट्र : किसका

दुर्योधन : मेरा।

शकुनी : नहीं, पाण्डवों का।

धृतराष्ट्र : कैसे ?

शकुनि : धर्मराज को फिर बुला कर जूआ रचाया जाये। उन्हें हारना ही है। शर्त हारने पर उन्हें बारह वर्षों के लिए बनवास करना पड़ेगा।

धृतराष्ट्र : मैं ऐसे कुचक्र में नहीं रह सकता। धर्मराज का जूआ खेलने के लिए बुलाना ठीक नहीं है। वे नहीं आयेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शकुनि : अवश्य आयेंगे। जूआ एक मदिरा है जिसका नशा तेज होता है, जो जल्दी उतरता नहीं। आप अनुमति दें।

धृतराष्ट्र : यदि तुमलोगों की ऐसी ही जिद है तो फिर खेलो। पर मुझे अब इस सभा भवन से जाने दो।

(धीरे-धीरे प्रस्थान)

शकुनि : दुश्शासन, धर्मराज के पास शीघ्र जाओ और आमन्त्रण दो। कहना कि महाराज धृतराष्ट्र ने निमन्त्रित किया है। वे अवश्य आयेंगे।

(दुश्शासन का प्रस्थान)

शकुनि : दुर्योधन उस बार तुम चूक गये। जीत गयी बाजी भी हार गये। इस बार सावधान रहो।

दुर्योधन : मामा, सच कहता हूँ कि हृदय में हाहाकार मचा है। पाण्डवों का दम्भ मिटा दो। उनके उत्साह को नष्ट कर दो। मैं यही चाहता हूँ।

शकुनि : यही होगा दुर्योधन। भगवती तुम पर प्रसन्न है। तुम निर्भय रहो। इन्द्रप्रस्थ का सिंहासन तुम्हें मिलेगा। द्रौपदी तुम्हारी दासी बन कर रहेगी। शकुनि की भविष्यवाणी झूठी नहीं हो सकती। जूएं के खेल में मुझे कोई हरा नहीं सकता। मैंने युधिष्ठिर पर वैसा मन्त्र फूँका है कि वह मन्त्रबद्ध साँप की तरह तुरत चला आयेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीम : (नेपथ्य में) जूआ अब नहीं हो सकता।

अर्जुन : (नेपथ्य में) धर्मराज तो अपनी सुध-बुध खो बैठे हैं।

(शकुनि कुटिल मुस्कान से दुर्योधन की ओर देखते हैं। पाण्डवगण और दुश्शासन का पुनः प्रवेश।)

युधिष्ठर : मामा, मैं आ गया।

शकुनि : मैं जानता था कि तुम धृतराष्ट्र के वचन पर अपनी जान तक दे सकते हो।

भीम : अपना मतलब बताओ शकुनि।

शकुनि : दुर्योधन का कहना है कि धर्मराज क्रुद्ध हैं। मैं कहता हूँ कि धर्मराज क्रोध करते ही नहीं। धृतराष्ट्र ने कहा कि धर्मराज का हृदय साफ है। इसी प्रसंग में जूआ का फिर आमन्त्रण भेजा गया। यदि धर्मराज का हृदय साफ है तो वे फिर जूआ खेलें।

भीम : शकुनि, यह आग तुम्हारी लगायी हुई है। इसमें तुम्हारी फिर कोई चाल है।

शकुनि : जय भगवती, मैं तो पासे फेकता हूँ, किसी का भाग्य नहीं बदलता। जिस तरह दुर्योधन का मैं मामा हूँ, वैसे ही तुम्हारा भी। धर्मराज एक दाव हो जाये।

धर्मराज : यदि दुर्योधन चाहता है तो मैं तैयार हूँ।

अर्जुन : धर्मराज, इस जूए की आड़ में कलह बढ़ रहा है। पांडवों की शक्ति का ह्रास हो रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मराज : मामा, पासे डालो।

शकुनि : शर्त यह कि जो हार जाये, वह बारह वर्षों तक परिवार के साथ वनवास करे।

युधिष्ठिर : स्वीकार है।

दुर्योधन : और तेरहवें वर्ष अज्ञातवास करे। यदि तेरहवें वर्ष में उसे पहिचान लिया जाये तो फिर बारह वर्ष तक वन में रहे।

युधिष्ठिर : स्वीकार है।

दुर्योधन : मामा, डालो पासे।

शकुनि : जय भगवती ! (पासे डालते हैं। अट्टहास) धर्मराज आपकी हार हुई।

दुर्योधन : हाः हाः हा : ! धर्मराज से भाग्यलक्ष्मी रूठी जान पड़ती है।

भीम : धर्मराज मैं जानता था कि यह भी कौरवों की एक चाल है। आप सत्य के द्वार पर ही लुट गये।

युधिष्ठिर : भीम, हम वनवास करेंगे। चलो, द्रौपदी को भी कह दें।

(पाण्डवों का प्रस्थान। शकुनि आदि हंसते हैं।)

शकुनी : शकुनि के पासों में तीर और तलवार से अधिक शक्ति है दुर्योधन। अब तुम निःशंक होकर राज्योपभोग करो। पांडव वन से कभी नहीं लौट सकते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : मामा, मैं तुम्हारा चिर-कृतज्ञ रहूँगा। तुमने मेरी अभिलाषा पूरी कर दी। चलो दुश्शासन।

(दुश्शासन के साथ प्रस्थान)।

शकुनि : मेरी दानवी अभिलाषा क्या चाहती है ?—रक्त ! लाल रुधिर ! ओह पांडवों का रुधिर कितना लाल होगा ! तब आयेगी कौरवों की बारी ! दुर्योधन का भी अन्त होगा। सारे जगत के सामने फूट का विषमय परिणाम उपस्थित करूँगा। मेरी लगायी हुयी आग में सारा भारत धधक उठेगा)—जूआ। निर्वासन ! युद्ध !—अन्त में सबका निर्वाण।—मैं यह सब क्यों चाहता हूँ ? चाहूँगा क्यों ?—भाग्य में लिखा है—होगा ही।(क्या हर्ज है कि शकुनि ही इस आग को फूँक दे !—तो वही हो।

(प्रस्थान)

*

तृतीय दृश्य

स्थान—नदी-तीर

(ब्राह्मण वेश में देवराज इन्द्र)

इन्द्र : कैसा विकट छल है। अर्जुन के लिए, मैं देवराज इन्द्र, याचक बनकर कर्ण के पास आया हूँ। कर्ण के पास जन्मजात कवच और कुन्डल हैं। जब तक कर्ण के पास ये रहेंगे, तब तक युद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में उसे कोई मार नहीं सकता। अर्जुन विजयी हो, इसके लिए आवश्यक है कि कर्ण के कवच और कुंडल हरण किये जायँ। कर्ण दानवीर है। आज उसकी परीक्षा होगी। लो कर्ण आ गया।

(कर्ण का प्रवेश)

कर्ण : मैं विप्रदेवता को प्रणाम करता हूँ।

इन्द्र : (आशीश देने का भाव) ब्राह्मण कुछ माँगने के लिए आया है अङ्गराज।

कर्ण : आप अपनी माँग को प्रस्तुत करें। कर्ण तैयार है।

इन्द्र : मेरी माँग विचित्र है।

कर्ण : आप शायद कर्ण की प्रतिज्ञा को नहीं जानते।

इन्द्र : सुन चुका हूँ। जानने का अवसर आज आया है।

कर्ण : कर्ण के द्वार से कोई भिक्षुक खाली हाथ नहीं लौटता ब्राह्मण। मेरी प्रतिज्ञा है कि जब तक पाण्डवों को जीत नहीं लेता, मुक्त हस्त से दान करेगा।

इन्द्र : मुक्तहस्त से या मुक्त हृदय से भी ?

कर्ण : मुक्त हृदय से भी। आप निःसंकोच कहिये। क्या चाहिये आपको ?

इन्द्र : मुझे संदेह है कि कर्ण अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकेगा।

कर्ण : आपका सन्देह मिथ्या है। आप मेरी परीक्षा लें।

इन्द्र : मुझे चाहिये ....नहीं-नहीं, मैं लौट जाता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : कर्ण आपको खाली हाथ लौटने न दूँगा। आपको प्रसन्न करके ही लौटाऊँगा। आप चाहते क्या हैं? —राज?

इन्द्र : नहीं।

कर्ण : धन-सम्पत्ति?

इन्द्र : नहीं।

कर्ण : मान?

इन्द्र : नहीं।

कर्ण : स्त्री?

इन्द्र : नहीं, नहीं।

कर्ण : मेरे प्राण?

इन्द्र : नहीं।

कर्ण : तो फिर क्या चाहिये आपको?

इन्द्र : तुम्हारे शरीर के कवच और कुण्डल।

कर्ण : (चीख कर) ब्राह्मण!

इन्द्र : मैं लौट जाता हूँ।

कर्ण : नहीं, बिना दान पाये आप लौट नहीं सकते।

इन्द्र : कवच और कुण्डल जन्म से ही तुम्हारे शरीर में जुटे हैं। उन्हें निकालते तुम्हें घोर कष्ट होगा।

कर्ण : यह ठीक है। पर आप बिना दान लिये लौटेंगे, उससे मुझे अधिक कष्ट होगा।

इन्द्र : तो फिर दान दो।

कर्ण : अवश्य दूँगा ब्राह्मण, आपने कवच और कुण्डल क्यों माँगे? मेरे प्राण की याचना क्यों नहीं की? क्यों नहीं मुझसे मेरा मस्तक माँग लिया? कवच और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुण्डल के साथ ही मेरी अभिलाषा जुटी हुई है। कर्णार्जुन-संग्राम में कर्ण की हार-जीत इन्हीं कवच और कुण्डल पर निर्भर करती है। जब तक मेरे शरीर में कवच और कुण्डल हैं, कोई वीर मुझे रणभूमि में मार नहीं सकता। कवच और कुण्डल देने का अर्थ है कि मैं अपने मरण को आमन्त्रित करूँ। मेरी प्रार्थना है ब्राह्मण, फिर से सोच लीजिये कवच और कुण्डल न माँग कर कुछ और माँगिये। सच कहता हूँ, आपके सामने मैं अपना मस्तक भी दे सकता हूँ, पर शत्रुओं के सामने अपना मस्तक झुका भी नहीं सकता।

इन्द्र : कर्ण मैं तुम्हारी दानशीलता के बारे में सुन चुका हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिये।

कर्ण : अच्छी बात है। ब्राह्मण, मैं कवच और कुण्डल ही आपको देकर सन्तुष्ट करूँगा। संसार जान जाये कि कर्ण ने अपना अंग काट कर भी ब्राह्मण को दान दिया। आकाश के सूर्यदेव इस बात के साक्षी रहें कि कर्ण ने अपने जीवन को दाव पर लगा दिया, पर अपने वचन का मोल घटने न दिया। आप ठहरिये। मैं अभी आया। (प्रस्थान)

इन्द्र : आश्चर्य ! कर्ण, देवराज इन्द्र तुम्हारे सामने नत-मस्तक है। ऐसे दानवीर का नाम भारत की भावी सन्तान श्रद्धा के साथ याद करेगी।

[कर्ण का पुनः प्रवेश। एक हाथ में पात्र। पात्र में रक्तरंजित कवच और कुण्डल। कर्ण के शरीर पर रक्तमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाव । दूसरे हाथ में रक्ताक्त छुरी ।]

कर्ण : लीजिये ब्राह्मण, कर्ण आपको दान देता है । ग्रहण कीजिये । (दान देना ।)

कर्ण : आप मेरी ओर आश्चर्य से देख रहे हैं । मुझे आनन्द है । यहे रक्त और घाव कवच और कुण्डल शरीर से अलग निकालने के कारण हैं ।

इन्द्र : कर्ण, तुम महान् हो । (मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ।) मुझे दुःख है कि तुम्हारे ही द्वार पर मैंने तुम्हें ठग लिया तुम मुझे पहिचान न सके ।

कर्ण : मैं आपको पहिचान गया । आप हैं देवराज इन्द्र ।

इन्द्र : कर्ण, महान् विस्मय से मैं तुम्हारी ओर देख रहा हूँ । यह जानकर भी कि मैं तुम्हें छल रहा हूँ, तुमने क्यों ऐसी उदारता दिखलायी ?

कर्ण : विस्मय करने की बात नहीं है देवराज । मैं समझता हूँ कि कर्णार्जुन-युद्ध आज हो गया और मैं उस युद्ध में विजयी हुआ हूँ ।

इन्द्र : कैसे ?

कर्ण : देवराज इन्द्र इस बात को भलीभाँति जानते थे कि अर्जुन विजयी नहीं होगा । इसी से छल करके आपने मेरे कवच और कुण्डल का हरण किया । (देवराज होकर आपने ऐसा अनुचित कार्य किया !) मैंने भी निःसंकोच भाव से आपकी माँग पूरी की । यह मेरी विजय नहीं तो क्या है ? महाभारत के युद्ध में कर्ण मारा जायगा यह विदित हो गया । लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाभारत-युद्ध के इतिहास को जब लोग पढ़ेंगे तो उन्हें ज्ञात हो जायेगा कि कर्ण के द्वार पर देवराज इन्द्र को भी भिखारी बन कर आना पड़ा था, और महाभारत-युद्ध में मर कर भी कर्ण ही विजयी हुआ।

इन्द्र : तुम ठीक कहते हो कर्ण। मैं लज्जित हूँ। लेकिन तुमने जाना कैसे कि मैं इन्द्र हूँ?

कर्ण : गत निशाकाल में जब मैं अपने प्रसाद के एक कक्ष में गम्भीर निद्रा में सोया था, तो मैंने एक विचित्र स्वप्न देखा। पूर्व दिशा के क्षितिज को फाड़ता हुआ दिव्यरूप का एक ब्राह्मण प्रकट हुआ। उसने मुझे कहा—"कर्ण, कल वेश बदल कर इन्द्र तुमसे कवच और कुन्डल माँगने आयेंगे। तुम कदापि न देना।" मैंने स्पष्टरूप से कहा कि कर्ण वचन-भंग न करेगा। वह दिव्य पुरुष मेरे इष्टदेव दिनपति सूर्य थे।

इन्द्र : सूर्यदेव? मैं समझ गया। जिस तरह अर्जुन मुझे प्रिय है, उसी तरह तुम उनके प्रिय हो।

कर्ण : इसका अर्थ मैंने नहीं समझा।

इन्द्र : समझने की कोई आवश्यकता नहीं है। कर्ण, तुमने इस अनुपम दान से अपना नाम अमर कर लिया है। मेरा आशीश है कि तुम्हारा घाव ठीक हो जाये आज्ञा दो, अब मैं जाना चाहता हूँ।

कर्ण : जैसी आपकी इच्छा।

इन्द्र : मेरे पैर आगे नहीं बढ़ते कर्ण। मैं तुम्हारे दान से दब गया हूँ। तुम वर माँगो। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : देवराज, कर्ण लेता नहीं, देता है। याचक से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

इन्द्र : ब्राह्मण को तुमने दान दिया है कर्ण। अब देवराज से वर प्राप्त करो। मैं बिना वर दिये हट नहीं सकता।

कर्ण : यदि आप देने को उत्सुक हैं तो अपनी "अमोघ शक्ति" मुझे दे दीजिए।

इन्द्र : सुन्दर ! तुमने ठीक माँगी है। "अमोघ शक्ति" का वार कभी खाली नहीं जाता। उसका प्रहार देव, दानव, मानव कोई भी नहीं सह सकता। इसका प्रहार अर्जुन पर भी हो सकता है। लेकिन उसके साथ एक प्रतिबन्ध है। 'अमोघ शक्ति' से तुम किसी एक व्यक्ति को मार सकोगे। फिर वह मेरे पास लौट आयेगी।

कर्ण : मुझे एक ही व्यक्ति के लिए 'अमोघ शक्ति' की आवश्यकता है देवराज। वह व्यक्ति है आचार्य द्रोण का प्रिय शिष्य, तृतीय पाण्डव, गांडीवधारी अर्जुन।

इन्द्र : ग्रहण करो 'अमोघ शक्ति' को (मन्त्र पढ़ कर एक वाण कर्ण को देते हैं। कर्ण घुटने टेक कर उसे ग्रहण करते हैं।)

इन्द्र : अब मैं सुखपूर्वक साँस ले सकूँगा। कर्ण, मैं फिर तुम्हें नमस्कार करता हूँ। (प्रस्थान)

कर्ण : कैसी प्रवंचना है ! भाग्य का कैसा खेल है ! निराशा के वातावरण में साँस लेना कठिन प्रतीत होता है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूतपुत्र से अंगराज ! लेकिन उससे लाभ ? परशुराम का अभिशाप मेरी हर साँस के साथ गूँज रहा है। आज मेरी अभिलाषा के आधार कवच और कुण्डल भी हर लिये गये। गगनमण्डल में भगवान भास्कर भी ऐसी घटना से क्षुब्ध हैं। अब तो 'अमोघ शक्ति' पर ही समस्त आशा केन्द्रित है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—विराट्नगर का राजप्रासाद

(युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण)

युधिष्ठिर : घनश्याम, तेरह वर्षों का वनवास बीत गया। उचित है कि दुर्योधन इन्द्रप्रस्थ का राज्य मुझे वापस कर दे।

कृष्ण : धर्मराज, आपका कहना ठीक है। पर दुर्योधन इसके लिये बिल्कुल तैयार नहीं है। इन्द्रप्रस्थ का राज्य तो कौन कहे पाँच भाइयों के लिये वह पाँच ग्राम भी देने को तैयार नहीं है। महाराज द्रुपद के पुरोहित हस्तिनापुर से असफल होकर लौट आये।

युधिष्ठिर : मेरा विचार है कि मार-काट न हो। लेकिन परम पवित्र कुरुकुल पर मौत की काली घटा छाई हुई है। दुर्योधन राज्यलोभ में पापपुण्य सब कुछ भूल गया है। शकुनि की मन्त्रणा के सामने वह किसी को राय न मानेगा।

कृष्ण : आपका विचार गलत नहीं है। पर शान्ति-स्थापना का उद्योग अन्त समय तक करना चाहिये। मैं जानता हूँ कि दोनों ओर से रण की तैयारियाँ हो रही हैं। दुर्योधन नहीं मानेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर : वासुदेव, आप तो दोनों दलों के हितचिन्तक हैं। सम्भव है, आपके कहने से मतिहीन दुर्योधन मान जाये और भारत भूमि पर वीरों के रक्त की नदी न बहने पाये। आपका जाना अत्यावश्यक है। हम पाँच भाई अपने गुजारे के लिये सिर्फ पाँच गाँव ही लेकर सन्तुष्ट हो जायेंगे। हम दुर्योधन को सार्वभौम सम्राट् मानने को तैयार हैं।

(आवेश में अर्जुन का प्रवेश)

अर्जुन : लेकिन मैं दुर्योधन की सत्ता नहीं मान सकता। दादा भीम भी मेरे साथ रहेंगे। धर्मराज, इस शान्तिप्रिय नीति को लेकर ही तो हमलोग कष्ट भोगते आये। अब और नहीं।

कृष्ण : अर्जुन, उत्तेजना में कुछ बोलना तुम्हें शोभा नहीं देता। धर्मराज की नीति ठीक है।

अर्जुन : धर्मराज के सिद्धान्त मेरे हृदय को स्पर्श नहीं कर पाते मधुसूदन। शान्ति का पथ हमारे लिए अब नहीं रहा। तेरह वर्षों तक घूमने के बाद अब शान्ति का उपदेश ग्रहण करना मुझे नहीं जँचता।

युधिष्ठिर : अर्जुन, आवेश में न आओ। रक्तपात की उत्तेजना देने से देश बर्बाद हो जायेगा। भारत के सभी राजवंशों में हस्तिनापुर का कुरुवंश सर्वश्रेष्ठ है। कुरुवंश के युद्ध में कूदते ही सारा भारत अशान्त हो उठेगा। सभी राजवंश मिट जायेंगे। रक्त की धारा बहेगी। क्या उससे कभी कल्याण होगा?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन : धर्मराज, क्या आप भूल गये जूए की चाल को ? क्या शकुनि कभी क्षमा का पात्र-सिद्ध होगा ? द्रौपदी जब अपनी लाज बचाने के लिये अंगराज के सामने गिड़गिड़ा रही थी, तो अंगराज ने क्या कहा था ? क्या उसे पाण्डवगण भूल सकते हैं ? भरी सभा में दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान किया। दादा भीम ने भीषम प्रतिज्ञा की। क्या प्रतिज्ञा-पूर्त्ति का अवसर आप न देंगे ?

कृष्ण : अर्जुन, तुम समझदार हो। जोश दिखलाने का अवसर अभी नहीं आया है। जब समय पर पानी बरसता है तो लाभ होता है, असमय की वर्षा से दुर्भिक्ष आता है। समय आने दो। तुम्हें बहुत कुछ करना होगा। अभी तो शान्ति का मार्ग ही सर्वोत्तम है।

अर्जुन : घनश्याम, आज तेरह वर्षों से रणभूमि में कूदने को मन तड़प रहा है। पांचाली के नयन के नीर मैं भूल नहीं पाया हूँ।

कृष्ण : अच्छी बात है। अब आप दोनों जाकर विश्राम करें। मैं कल खूब सबेरे हस्तिनापुर को जाऊँगा।

युधिष्ठिर : जो आज्ञा। चलो अर्जुन।

(युधिष्ठिर और अर्जुन का प्रस्थान)

कृष्ण : भारत का भविष्य अन्धकारमय जान पड़ता है। शान्ति स्थापना के लक्षण अच्छे नहीं जान पड़ते। दुर्योधन के सिर पर काल है। देख रहा हूँ सामने —रण का मैदान, तीर और तलवार, रक्त-धारा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रलय होकर ही रहेगा। भारत की एकता नष्ट हो रही है। आवश्यकता है कि सभी राजाओं का नाश हो और एक सम्राट् समस्त भारत पर अपनी जय-ध्वजा फहराये। कौन ? द्रौपदी ?

द्रौपदी : (प्रवेश करके, बाल खुले हुए) क्या यह सच है घनश्याम ?

कृष्ण : क्या कृष्णे ?

द्रौपदी : यही कि आप सन्धि कराने के लिए हस्तिनापुर जा रहे हैं।

कृष्ण : सच है ?

द्रौपदी : क्या पाण्डव मेरे अपमान को भूल गये ?

कृष्ण : नहीं।

द्रौपदी : तो फिर सन्धि का अर्थ क्या है ?

कृष्ण : शान्ति स्थापना है सन्धि का अर्थ।

द्रौपदी : मेरे केश तेरह वर्षों से खुले हैं। क्रोध में फुंफकारती हुई नागिन की तरह मेरी केशराशि कौरवों का रक्त माँगती है। यह तेल से नहीं बंधेगी, बल्कि दुश्शासन के रक्त से बँधेगी। यदि पांडव मेरे अपमान का बदला नहीं लेंगे, तो मैं स्वयं दुर्गा बनकर रणक्षेत्र में जाऊँगी।

कृष्ण : द्रौपदी, अधीर मत बनो। क्या होने को है, मैं जानता हूँ। इससे कहता हूँ कि तुम शान्ति धारण करो।

द्रौपदी : शान्ति ? भैया अब शान्ति कहाँ ? कौरवों ने मेरी शान्ति भंग कर दी है। मेरा कंचन-मन्दिर लूट लिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। कुरुसभा के उस दृश्य को मैं भूल नहीं पाती। यदि आप मेरी रक्षा नहीं करते तो दुश्शासन अवश्य मुझे वस्त्रहीन कर देता। पांडव तो हार चुके थे।

कृष्ण : कृष्णे बहन, तुम नारी हो, क्षमा की मूर्त्ती बनो।

द्रौपदी : घनश्याम, मैं कौरवों को कभी क्षमा नहीं करूँगी। जो व्यक्ति स्त्री की प्रतिष्ठा को अपने पैरों से रौंदे, वह क्या क्षमा पाने योग्य है? आप नीति-विशारद हैं पीताम्बर आपने ही तो मुझे बताया है कि अन्याय का सामना करना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

कृष्ण : तुम ठीक कहती हो द्रौपदी। लेकिन मेरे महत् उद्देश्य को तुम समझ नहीं पातीं। इतना ही जान लो कि तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।

द्रौपदी : कैसे समझेंगे आप मेरी मर्मव्यथा को? कैसे समझेंगे आप मेरे करुण क्रन्दन को? हृदय चूर-चूर हो रहा है। यदि धर्मराज और धनंजय मेरे अपमान का बदला नहीं लेंगे, तो मैं स्वयं लूँगी। अभिमन्यु को सेनापति बनाकर अपने पाँचों पुत्रों को रणांगन में भेजूँगी। वे अपनी माँ के अपमान का बदला अवश्य लेंगे। नारी-अपमान को सब भले भूल जायें, पर पुत्र नहीं भूल सकता। जाइये, कीजिये सन्धि। पर सन्धि के समय इन खुले केशों को मत भूलियेगा।

कृष्ण : हताश न होओ द्रौपदी। कौरवों के पाप का घड़ा भर गया है। फूटने के लिए कारण भी उपस्थित हो गया है वह कारण है—पांचाली का अपमान। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी चेष्टा करने पर भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन सन्धि नहीं करेगा। उसके सिर पर काल नाच रहा है। युद्ध अवश्यम्भावी है। आज तुम दुःख पा रही हो। कल कौरव-रमणियाँ खुले केशों को फैला कर रोयेंगी। राजहिषी कहकर समस्त भारत तुम्हारा अभिनन्दन करेगा। जाओ, शोक न करो।

*

द्वितीय दृश्य

स्थान—हस्तिनापुर की राज सभा

(सिंहासन पर महाराज दुर्योधन। आसपास धृतराष्ट्र शकुनि, दुश्शासन-कर्ण, सामन्तगण तथा अन्य बड़े बूढ़े। सामने एक आसन पर श्रीकृष्ण)

दुर्योधन : हमें बहुत हर्ष है कि श्रीकृष्ण ने पधार कर इस राज-सभा की शोभा बढ़ाई है। हम उनके आने का महत् उद्देश्य सुनने को बेचैन हैं।

कृष्ण : सम्राट् दुर्योधन, पाण्डवों ने बारह वर्ष बनवास और एक वर्ष अज्ञातवास किया। अब उनका अनुरोध है कि तुम प्रतिज्ञानुसार उनके इन्द्रप्रस्थ का राज्य वापस करो।

दुर्योधन : पाण्डव ? कौन पाण्डव ? किस अधिकार से वे इन्द्र-प्रस्थ का राज्य वापस माँगते हैं ?

कृष्ण : क्या पाण्डवों को तुम भूल गये ? शकुनि के पापों से तुमने छल करके पाण्डवों का राज्य हस्तगत किया था। वही राज्य उन्हें वापस मिलना चाहिए।

दुर्योधन : आप भूलते हैं द्वारिकाधीश। पिता जी ने मेरे बचपन में भूल से राज्य का बँटवारा कर दिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। सिंहासन का उत्तराधिकारी मुझे बनना चाहिए था, युधिष्ठिर को नहीं। जब मुझे होश हुआ तो मैंने अपना हक वापस कर लिया।

कृष्ण : तुम भूलते हो कुरुराज। राजा पाण्डु के बाद उनके पुत्र युधिष्ठिर कम उम्र के थे। इससे राज्य की देख-रेख पाण्डु के भाई-तम्हारे पिता धृतराष्ट्र करने लगे। जब तुमने झगड़ा खड़ा किया तो हस्तिनापुर की गद्दी तुम्हें मिली और खांडव बन का भाग पाण्डवों को मिला। पाण्डवों ने अपने विक्रम से वहाँ इन्द्रप्रस्थ की रचना की।

दुर्योधन : मैं पूछता हूँ कि हस्तिनापुर की गद्दी मुझे मिली क्यों? इसलिए कि न्याय मेरे पक्ष में था।

कृष्ण : महाराज धृतराष्ट्र, आप ही बतायें कि कौन ठीक कह रहा है—मैं या कुरुराज दुर्योधन।

धृतराष्ट्र : श्रीकृष्ण का कहना बिल्कुल ठीक है।

दुर्योधन : बिल्कुल गलत है। श्रीकृष्ण पाण्डवों का पक्ष लेते हैं।

कृष्ण : तुम झूठ बोलते हो दुर्योधन। याद है तुम्हें वह समय जब तुम और अर्जुन एक साथ मेरे पास भावी युद्ध में सहायता मांगने आये थे? तुम्हारे कहने पर ही मैं यादवों की पूरी सेना तुम्हें दे चुका हूँ, और चूँकि तुमने मुझे निरस्त्र समझ कर मेरा कुछ उपयोग न समझा, इससे अर्जुन ने मुझे अपने पक्ष में ले लिया। यदि मैं पाण्डवों का पक्ष लेता तो तुम्हें द्वारिका की पूरी सेना कभी नहीं देता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतराष्ट्र : श्रीकृष्ण ठीक कहते हैं। दुर्योधन, विवाद न करो। बात समझो और श्रीकृष्ण का कहा मानो।

दुर्योधन : मैं बिना युद्ध किये सूई की नोक भर भी जमीन पाण्डवों को न दूँगा। यह मेरा निश्चय है।

कृष्ण : तुम्हारा निश्चय ठीक नहीं हैं कुरुराज। मैं जानता हूँ कि तुम्हें मन्त्रणा देनेवाला कौन है।

दुर्योधन : कौन है ?

कृष्ण : शकुनि। लेकिन शकुनि को तुम पहिचान न सके। वह कुरुवंश में आग लगा कर आनन्द करना चाहता है। कौरव और पाण्डव लड़ कर नष्ट हो जायें, यही वह चाहता है।

शकुनि : श्रीकृष्ण, मैं तो भगवती का भक्त हूँ। मेरे मत्थे सारा दोष क्यों लाद दिया ? सम्राट् दुर्योधन कहें तो मैं आज ही गान्धार देश को लौट जाऊँ।

कृष्ण : शकुनि तुम कृष्ण की आँखों में धूल नहीं झोंक सकते। भगवती का नाम लेकर तुम दुर्योधन को धोखा दे सकते हो, कृष्ण को नहीं।

दुर्योधन : श्रीकृष्ण, मेरा अन्तिम निर्णय है—संग्राम।

कृष्ण : महाराज धृतराष्ट्र, आप वृद्ध हैं। जीवन के अन्तिम क्षणों में क्या आप अपने वंश का सर्वनाश देखना चाहते हैं। भारत में सर्वश्रेष्ठ है आपका यह कुरु-वंश। कौरव पाण्डव के इस घोर युद्ध में सारी पृथ्वी नष्ट हो जायेगी, विधवाओं के करुण क्रन्दन से आकाश गूँज उठेगा। आप अपने बेटे को समझा दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,2N(५१)CH;1 H6

धृतराष्ट्र : बेटा दुर्योधन, सर्वनाश को आमन्त्रण मत दो। श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम हैं। इनमें दिव्य शक्ति है। इन्होंने कंस जैसे दानव का वध किया है। बाणासुर और नरकासुर जैसे दैत्य भी कृष्ण के सामने गिर चुके हैं। ये हमारे हित की बातें कहते हैं। इनकी बातों का निरादर न करो। रूठे हुए पाण्डवों को मना कर ले आओ, और इन्द्रप्रस्थ का राज्य उन्हें वापस करो।

दुर्योधन : पिताजी, उम्र अधिक होने के कारण आप में बुद्धि का अभाव है। दुर्योधन जाकर रूठे हुए पाण्डवों को मनाये ? आश्चर्य है आपकी ऐसी राय पर ! पाण्डव हमारे चिरशत्रु हैं। हम उन्हें नष्ट करके रहेंगे।

कृष्ण : मुझे अब बोलना ही पड़ा कुरुराज। तुम शायद स्वप्नलोक में विचर रहे हो। पाण्डव अजेय हैं। भीम के हाथ में गदा है, उसने अपने शारीरिक बल से मगध-सम्राट् जरासन्ध का वध किया है। अर्जुन के हाथ में गाण्डीव धनुष है जिससे अकेले ही उसने तुम सबों को विराटनगर में पराजित किया है। नकुल और सहदेव की तलवारों में बिजली की चमक है। अर्जुन अकेला इस पृथ्वी को जीत सकता है। उसने महादेव से युद्ध करके उनसे पाशुपतास्त्र पाया है। उसे इस पृथ्वी पर कोई पराजित नहीं कर सकता।

दुर्योधन : आप भूलते हैं श्रीकृष्ण। कौरव-पक्ष के वीरों को आप नहीं जानते। बाल-ब्रह्मचारी पितामह भीष्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी

ने एक बार परशुराम को भी पराजित किया था। उनकी मौत उनके हाथ में है आचार्य द्रोण के वीरत्व से कौन अपरिचित है? द्रोण की ही कृपा का प्रताप है कि अर्जुन एक धनुर्धर हो गया अंगराज कर्ण को कौन जीत सकता है। इसने साधन करके महर्षि परशराम से रण विद्या पाई है। कर्ण के पास "अमोघ शक्ति" है जिसके द्वारा अर्जुन भी मारा जा सकता है। कर्ण ने अपने बाहुबल से उत्कल, मेकल, पौण्ड्र, कलिङ्ग, आन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त आदि देशों के राजाओं का मान-मर्दन किया है। कृपाचार्य और अश्वत्थामा की रण-विद्या किसी से छिपी नहीं है। (हमारे सिर्फ एक भाई दुश्शासन में एक हजार हाथियों का बल है।—इन वीरों से लड़ना काल को निमन्त्रण देना है, मौत को गले लगाना है।

कृष्ण : तुम्हारे वीरों की वीरता कहाँ सोई थी जब गंधर्व-राज चित्रसेन ने तुम्हें रणभूमि में कैद कर लिया था? अर्जुन ने तुम्हारे लिए गंधर्व से युद्ध करके, उसे पराजित करके, तुम्हें बन्धन-मुक्त कराया था। पांचाल देश के द्रौपदी-स्वयंवर में जब सभी राज-गण लक्ष्य-भेद करने से विफल हुए थे, तो किसने वीरों का मान रखा था?—बताओ, वह अर्जुन के सिवा और कौन था? विराटनगर पर तुम्हारे वीरों ने आक्रमण किया था, लेकिन कौन विजयी हुआ? उसी युद्ध में अकेले अर्जुन ने युद्ध करके तुम्हारी सेना के छक्के छुड़ा दिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। स्वयं बालब्रह्मचारी भीम भी अर्जुन के प्रहार से मूर्छित हो गए थे। (जानता हूँ कि दुश्शासन में एक हजार हाथियों का बल है, लेकिन क्या तुम भूल गये कि भीमसेन में दस हजार हाथियों की शक्ति है ?

दुर्योधन : श्रीकृष्ण, धमकी के बल पर कुरुराज दुर्योधन देवराज इन्द्र के सामने भी नहीं झुक सकता। मैंनें ग्यारह अक्षोहिणी सेना ठीक कर ली है। देखना है, पाण्डव युद्ध में कैसे विजयी होते हैं।

कृष्ण : अर्जुन के रथ पर हनुमान रहेंगे। सारथि के रूप में मैं रहूँगा। क्या तुम इन्हें कम समझते हो ?)

दुर्योधन : हा: हा: हा: ! हनुमान ! मैं उनकी पर्वाह नहीं करता। आप तो निरस्त्र रहेंगे। आपने युद्ध-भूमि में हथियार न छूने की शपथ ले ली है। फिर आपसे डर कैसा ? मैं तो समझता हूँ कि यदि आप अर्जुन से दूर रहें तो कम से कम उसके रथ का भार हल्का रहे।

कृष्ण : महाराज धृतराष्ट्र, (फिर कहता हूँ,) दुर्योधन को समझाइये। इसकी दुष्ट बुद्धि से महानाश का डर है।)

धृतराष्ट्र : बेटा दुर्योधन, तुम श्रीकृष्णचन्द्र से क्षमा माँग लो, कुरुवंश को महानाश से बचा लो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन : इस राजसभा में श्रीकृष्ण दूत बन कर आये हैं। दुर्योधन दूत से क्षमा माँगना नहीं जानता।

कृष्ण : दुर्योधन तुम अपनी सीमा से बाहर जा रहे हो।

दुर्योधन : दुर्योधन राजा है। आप एक दूत हैं। दूत को ही अपनी सीमा का ज्ञान होना चाहिए।

कृष्ण : यहाँ तक ! महाराज धृतराष्ट्र, नीति कहती है कि कुल की रक्षा के लिए एक पुरुष का, ग्राम की रक्षा के लिए एक कुल का और देश की रक्षा के लिए एक ग्राम का त्याग कर देना चाहिए।

धृतराष्ट्र : इसका अर्थ ?

कृष्ण : कुरुकुल को महानाश से बचने के लिए आप आज्ञा दें कि दुर्योधन बन्दी कर लिया जाय।

दुर्योधन : कौन करेगा कुरुराज को बन्दी ? श्रीकृष्ण, आप नीति की आड़ में मेरे पिता को कुमन्त्रणा दे रहे हैं, मेरे परिवार में विप्लव की चिनगारी डाल रहे हैं। मेरे बन्दी करने की राय देकर आपने दुस्साहस किया है। अब कल्याण इसी में है कि आप इस भरी सभा में मुझसे क्षमा-याचना करें।

कृष्ण : कृष्ण ने जीवन में क्षमा-याचना की ही नहीं।

दुर्योधन : आपको क्षमा माँगनी पड़ेगी, अन्यथा कारागार का द्वार आपके लिए खुला है।

कृष्ण : सावधान दुर्योधन ! वचन वापस लो।

दुर्योधन : दुश्शासन दूत को अविलम्ब कैद कर लो।

कृष्ण : सावधान ! अभी आकाश टूट पड़ेगा, पृथ्वी की की छाती चूर-चूर हो जायेगी।। मैं मनुष्य नहीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर-संहारी काल हूँ। जिसमें साहस हो, बढ़े आगे, कर ले मुझे कैद। कृष्ण के कैद होने से सृष्टि नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी। हाः हाः हाः।
(अट्टहास गूँजता है। भयानक शब्द। घोर अंधकार)

धृतराष्ट्र : (अन्धेरे में) क्षमा कीजिए मधुसूदन। मेरे पुत्र को क्षमा कीजिए। आपकी विराट्मूर्त्ति मैंने इन अन्धी आँखों से देख ली है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। अन्धकार को दूर कीजिए।

कृष्ण : महाराज धृतराष्ट्र, योगबल से किये गये अन्धकार को मैं वापस लेता हूँ। (पुनः प्रकाश) क्यों दुर्योधन, क्या हाल है? सोचकर बोलो—शान्ति या युद्ध?

दुर्योधन : युद्ध।

कृष्ण : मैं आया था शान्ति-स्थापन करने के लिए, पर, जाता हूँ युद्ध का निमन्त्रण लेकर। आज के सातवें दिन अमावश्या होगी। उसी दिन युद्ध प्रारम्भ होगा।

दुर्योधन : स्वीकार है। अमावश्या के दिन कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान में कौरव-पांडव का ऐतिहासिक युद्ध प्रारम्भ होगा। अच्छा, अब रणभूमि में ही भेंट होगी। (प्रस्थान)। पीछे-पीछे धृतराष्ट्र, दुश्शासन, और शकुनि आदि का प्रस्थान। सिर्फ श्रीकृष्ण और कर्ण रह जाते हैं।)

कृष्ण : कर्ण, मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।

कर्ण : मैं उपस्थित हूँ घनश्याम। आज्ञा दीजिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण : तुम कौन हो ? —क्या यह जानते हो ?

कर्ण : मैं अधिरथ सारथि का पुत्र हूँ। राधा मेरी माँ है।

कृष्ण : तुम नहीं जानते। कुन्ती तुम्हारी माँ है।

कर्ण : (चौंककर) असंभव। आप मुझे चक्कर में डालना चाहते हैं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

कृष्ण : आज समय आ गया है जब तुम्हें अपनी जन्म-कहानी जान लेनी है।

कर्ण : जन्म-कहानी से क्या मतलब ?

कृष्ण : है मतलब। अभी भी कुरुक्षेत्र में होने वाला यह भयानक संग्राम रुक सकता है। अच्छा, पहले अपनी जन्म-कहानी सुन लो।

कर्ण : कहिए, मैं सुनूँगा !

कृष्ण : तुमने कुन्ती के गर्भ से उसकी कन्यावस्था में सूर्य-देव के आशीर्वाद से जन्म लिया है। लेकिन कुन्ती ने समाज के भय से तुम्हारा त्याग कर दिया। फिर अधिरथ और राधा ने तुम्हारा पालन-पोषण किया। धर्मानुसार तुम्हारे पिता महाराज पाण्डु हुए। शास्त्र दृष्टि से तुम्हीं राज्य के अधिकारी हो। युधिष्ठिर तथा अन्य पांडव तुमसे छोटे हैं। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि पांडवगण, अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पाँच पुत्र तुम्हारे चरण छुयेंगे। तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और कुरुक्षेत्र का विनाश युद्ध रुक जायगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : घनश्याम, आपने मुझे उलझन में डाल दिया। कुन्ती ने मेरा जन्म दिया, लेकिन राधा ने मेरा पालन-पोषण किया। पग-पग पर वंश की हीनता के कारण मैं अपमानित होता रहा। दुर्योधन ने अंगदेश का राजमुकुट मेरे सिर पर रखकर मेरी मर्यादा बढ़ाई। आज मैं एक बड़े राज्य के लोभ में पड़कर दुर्योधन को धोखा नहीं दे सकता।

कृष्ण : कर्ण, यदि तुम मेरी बात मान जाओ तो सारा झगड़ा तुरत तय हो सकता है।

कर्ण : नहीं केशव, आपके लिये मेरे हृदय में श्रद्धा का स्थान है। पर इस बात को मानकर मैं अपने संकल्प की हत्या नहीं कर सकता। दुर्योधन के प्रति जो मैं ऋण चुका रहा हूँ, उसे आप अधर्म की संज्ञा नहीं दे सकते।

कृष्ण : लेकिन संग्राम का परिणाम क्या होगा ?

कर्ण : संग्राम के परिणाम को मैं जानता हूँ। जिसके पक्ष में नारायण के अवतार स्वयं श्रीकृष्ण हों, जिसके रथ पर महावीर हनुमान हों, जिसके पक्ष में भीष्म-वध वरदान पाये हुए शिखन्डी हों, द्रोण-वध का वरदान पाये हुए धृष्टद्युम्न हों, उस पक्ष की जीत में सन्देह करना व्यर्थ है। जीत पाण्डवों की ही होगी

कृष्ण : कर्ण मैं तुम्हारी दानशीलता और शौर्य से बहुत प्रसन्न हूँ। दुःख है कि मेरे आने का उद्देश्य न हो सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : अच्छा, अब आज्ञा दीजिए। कुरुक्षेत्र की भूमि पर ही अब मै आपके दर्शन कर सकूँगा—मित्र के रूप में नहीं, शत्रु के रूप में। अच्छा, प्रणाम।

(कृष्ण आशीष देते हैं)

*

तृतीय दृश्य

स्थान—नदी-तीर

(कर्ण और कुन्ती)

कर्ण : पाण्डव-जननी को राधा का पुत्र कर्ण प्रणाम करता है। स्वीकार हो।

कुन्ती : कर्ण राधा का पुत्र नहीं, कुन्ती का पुत्र है।

कर्ण : एक बार श्रीकृष्ण ने भी ऐसा कहा था। पर मुझे विश्वास नहीं हुआ।

कुन्ती : क्यों नहीं विश्वास हुआ कर्ण ?

कर्ण : मैंने राधा से इतना प्रगाढ़ स्नेह पाया कि मुझे विश्वास ही नहीं होता कि माँ कभी बच्चे को त्याग भी सकती है।

कुन्ती : तुम ठीक कहते हो कर्ण। लेकिन परिस्थिति में पड़कर ही मैंने तुम्हारा त्याग किया था।

कर्ण : और आज भी परिस्थिति में पड़कर ही तुम मुझे "पुत्र" बनाने आयी हो। क्यों ?

कुन्ती : हाँ कर्ण। मैं ही अभागिनी तुम्हारी माँ हूँ। जब मैं अविवाहिता थी तो दुर्वासा ऋषि ने ... मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बताये। उन्होंने कहा कि जिस देवता को याद करके मन्त्र को पढ़ा जायेगा, उसके तेज से एक पुत्र उत्पन्न होगा। मैंने परीक्षा लेने के हेतु भगवान सूर्य को याद करके मन्त्र को पढ़ा। कवच और कुण्डल धारण किये हुए दिव्य स्वरूप के साथ भगवान सूर्य मेरे सामने खड़े हो गये। मैंने उनसे अपनी मूर्खता के लिए क्षमा माँगा और उन्हें लौट जाने को कहा। पर वे बोले—"मेरे प्रभाव से तुम्हें कवच-कुण्डल-धारी एक पुत्र उत्पन्न होगा, पर उससे तुम्हारे चरित्र पर कोई कलंक नहीं लगेगा।"

कर्ण : फिर क्या हुआ?

कुन्ती : ठीक समय पर मेरे गर्भ से एक बालक उत्पन्न हुआ। मैंने समाज के भय से एक मंजूषा में बन्द करके उसे नदी की धारा में छुड़वा दिया।

कर्ण : फिर

कुन्ती : अधिरथ सारथि ने उस मंजूषा को पाया। वह पुत्र-हीन था। इसलिए उसने और उसकी स्त्री राधा ने उस बालक को बड़े प्रेम से पाला पोसा। वही बालक आज कर्ण है।

कर्ण : तुमने नदी की बीच धारा में डालकर एक तरह से मुझे मार ही डाला था। अधिरथ और राधा ने मुझे जीवनदान दिया। तुम ही बताओ कि मैं तुम्हें माँ कैसे मान सकता हूँ? तुम तो पुत्रघातिनी हो।

कुन्ती : तुम ठीक कहते हो कर्ण। आज बरसों से मेरे हृदय के भीतर तूफान का गर्जन हो रहा है। भावनाओं का द्वन्द्व मचा है। मैं स्वयं लज्जित हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : रंगभूमि में मैंने अर्जुन को ललकारा था। भीष्म और द्रोण ने मेरे वंश को चुनौती दी, मुझे अपमानित किया। वंश की हीनता के कारण मैं खून का घूँट पीकर रह गया। तुम भी तो उस रंगभूमि में एक ओर बैठी थी। क्या उस समय तुम्हारे हृदय में मेरे लिए स्नेह नहीं उत्पन्न हुआ था ? क्यों नहीं तुम जोर से चिल्ला पड़ी कि कर्ण मेरा बेटा है। लेकिन तुमने जान बूझ कर, अर्जुन के मोह में, मेरा अपमान देखा। यह तो दुर्योधन की उदारता थी कि उन्होंने जनमत के विरुद्ध मुझे अंग देश का राजा बना दिया।

कुन्ती : कर्ण, सभी पाण्डव तुमसे छोटे हैं। सिंहासन के अधिकारी तुम हो। युधिष्ठिर तुम्हारा युवराज बनकर रहेगा। भीम और अर्जुन तुम्हारे चरणों की पूजा करेंगे। तुम पाण्डवों से मिल जाओ।

कर्ण : असम्भव ! कर्ण पाण्डवों का विरोध जीवन भर करता रहा है। आज जब मुझे दुर्योधन को नमक का कर्ज चुकाने का अवसर आया है, तो मैं पाण्डवों से कैसे मिल जाऊँ ? दुनिया क्या कहेगी ?

कुन्ती : कौरव अन्यायी हैं। उन लोगों ने जान बूझकर पाण्डवों को कष्ट दिया है। ऐसे अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना कोई अधर्म न होगा कर्ण।

कर्ण : कौरव कर्म की टीका-टिप्पणी करना मेरा काम नहीं है। दुर्योधन ने मेरा मान बढ़ाया है। मैं उनके लिए सर्वस्व दे दूँगा। तुमने माँ होकर मुझे क्षत्रिय से सूत कुल में भेज दिया। दुर्योधन ने मित्र होकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे सूत-कुल से क्षत्रियकुल में लाया। कौन सम्मान के योग्य है ? तुम या कुरुराज दुर्योधन ?

कुन्ती : कल से महाभारत का भीषण संग्राम प्रारम्भ होगा। तुम इस भीषण नरसंहार को रोक सकते हो।

कर्ण : नहीं माँ, इसे कोई नहीं रोक सकता। यह युद्ध अवश्यम्भावी है।

कुन्ती : कौरवों की ओर से कल के युद्ध के सेनापति भीष्म होंगे। मैंने सुना है कि जब तक वे युद्ध करेंगे, तब तक तुम युद्ध न करोगे क्या यह सच है ?

कर्ण : सच है। भीष्म की वीरता को संसार जानता है। लेकिन उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैंने भी प्रतिज्ञा की है कि उसके गिरने के बाद ही मैं रणभूमि में प्रवेश करूँगा।

कुन्ती : भीष्म को इच्छामृत्यु का वरदान है। उन्हें गिरने में समय लगेगा। तब तक तुम पांडवों की ओर से युद्ध करो।

कर्ण : दुर्योधन के विरुद्ध मैं कभी नहीं जाऊँगा। इसे तुम मेरा निश्चय जानो।

कुन्ती : मैं तुम्हारी जननी हूँ। मेरे प्रति भी तुम्हारा कुछ कर्त्तव्य है। मैं अपना हक माँगने आयी हूँ।

कर्ण : उस हक को तुमने स्वयं खो दिया है। यदि मैं पांडवों से मिल जाती हूँ तो दुनिया मुझे कायर और स्वार्थी कहेगी। मैं दुर्योधन के विश्वास की कभी हत्या न करूँगा। यदि और कुछ चाहती होतो माँग लो।

कुन्ती : पांडवों की प्राण रक्षा का वचन दो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : अर्जुन से मेरी शत्रुता है। उसकी प्राणरक्षा का वचन नहीं दे सकता। शेष चार पांडवों को मैं अपने हाथ में पाकर भी नहीं मारूँगा।

कुन्ती : मैं आई थी छः पुत्रों की आशा में, पर ले जा रही हूँ चार। कर्ण, तुम तो दानवीर हो। अपनी माँ को भिक्षा दो।

कर्ण : तुम्हारे पाँच पुत्र ज्यों के त्यों रहेंगे माँ। यदि अर्जुन मारा गया तो मैं पांडवों के पक्ष में चला जाऊँगा, और यदि मैं मारा गयातो तुम्हारे पाँच पुत्र बने रहेंगे। लेकिन भविष्य कह रहा है कि अर्जुन की विजय निश्चित है। जिसके सारथी योगीराज श्रीकृष्ण हों, जिसके रथ पर महावीर हनुमान हों, जिसके पास महादेव का दिया हुआ दिव्य पाशुपतास्त्र हो, उसे कौन पराजित कर सकता है ?

कुन्ती : जब तुम संग्राम का फल जानते हो तो फिर लड़ने की मूर्खता क्यों करते हो ?

कर्ण : संसार कर्णार्जुन-युद्ध देखने को बेचैन है। मैंने भी अर्जुन की शूरता की बानगी देखी है। रण-भूमि में मैं उस वीर के विक्रम का आनन्द लेना चाहता हूँ। अर्जुन से युद्ध करके इस संशय को मिटा देना चाहता हूँ कि वीरता किसमें अधिक है।.......माँ, तुमने अन्त समय में मुझसे भेंट की। लेकिन आज मेरे मन का एक कठोर प्रश्न सुलझ गया। तुमने मेरा तिरस्कार अवश्य किया है। पर तुम मेरी जननी हो। मेरे कठोर शब्दों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को भूल जाओ। मुझे क्षमा करो और रण में जाने की अनुमति दो।

कुन्ती : जाओ पुत्र, मेरा दुर्भाग्य है कि मैं तुमसे ऐसे समय पर मिली जब तुम दूसरे के हो चुके हो। मेरी अनुमति है, क्षत्रिय की भाँति युद्ध करो। तुम और अर्जुन दोनों ही मेरे उदर से जन्मे हो। लेकिन क्या करूँ अपने सामने एक पुत्र को मरते हुए और दूसरे को विजय के उन्माद में हँसते हुए देखूँगी। माँ क्या करेगी? वह रोयेगी या हँसेगी? अच्छा कर्ण, अब मुझे जाने दो।

(कर्ण कुंती के पैर को छूकर प्रणाम करते हैं। कुंती आशीर्वाद देकर, आंचल से आँसू पोंछती हुई, चली जाती है।)

कर्ण : कर्ण का जीवन विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। भाग्य बराबर आँखमिचौनी का खेल खेल रहा है। परिश्रम से मैंने परशुराम की सेवा में रहकर रण-विद्या सीखी, लेकिन उनका भयानक अभिशाप मेरे सामने पहाड़ की तरह खड़ा है। इन्द्र ने कपट से मेरे कवच और कुंडल का हरण किया। आज पांडव जननी ने भी मुझे चारपांडवों की प्राणरक्षा के बन्धन में बाँध लिया। एक ओर धर्म और दूसरी ओर प्रतिशोध। इन दोनों के बीच मेरा हृदय छटपटा रहा है। मस्तिष्क का खून खौल रहा है। अब तो सामने है कर्णार्जुन-संग्राम। कर्णार्जुन-संग्राम।

(प्रस्थान)

पटाक्षेप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—कौरव-शिविर का एक भाग

स्थान—रात

(कर्ण और दुर्योधन बातें कर रहे हैं)

दुर्योधन : कर्ण, दस रोज घोर युद्ध करने के बाद पितामह भीष्म रणभूमि में गिर पड़े। उनके बाद, तुम्हारे कहने से, मैंने आचार्य द्रोण को सेनापति बनाया। आज धोखे से युधिष्ठिर ने आचार्य द्रोण का भी वध करवा डाला। अब कौरव-पक्ष में कौन ऐसा वीर शेष रह गया जिसे कल के युद्ध में सेनापति बनाया जाय।

कर्ण : कुरुराज, मुझे दुःख है कि कौरव-सेना असंख्य रूप से रोज ही कट रही है। भीष्म और द्रोण जैसे महारथियों की मृत्यु हमारे पक्ष के लिए बहुत ही भयानक है।

दुर्योधन : अंगराज, अपनी बची हुई सेना को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि अब तुम्हारे अतिरिक्त ऐसा कोई वीर नहीं है, जिसे कल के युद्ध में सेनापति बनाया जाये। मेरा निवेदन है कि कल तुम सेनापति बनो और पांडव-सेना को अपने बाण से धूमराशि की भाँति उड़ा दो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : आपका आदेश स्वीकार है कुरुराज। कल सेनापति मैं बनने को तैयार हूँ। मेरे पास दिव्यास्त्र हैं। मैंने अर्जुनवध की प्रतिज्ञा भी की है। कल कर्णार्जुन-संग्राम होगा। पांडव पक्ष के वीरों का मरण होगा। लेकिन मैं एक कमी का अनुभव करता हूँ।

दुर्योधन : कुरुराज दुर्योधन अपने नये सेनापति की माँग को पूर्ण करेगा। क्या चाहिए तुम्हें ?

कर्ण : अर्जुन महावीर है। उसने स्वर्गलोक में रणविद्या सीखी है। मैं भी महावीर हूँ। मैंने परशुराम से रणविद्या पाई है। अर्जुन के पास दिव्यास्त्र हैं। मेरे पास भी दिव्यास्त्र हैं। अर्जुन के पास अग्निदेव का दिया हुआ गाण्डीव धनुष है। मेरे पास भी परशुराम का दिया हुआ "विजय" धनुष है, जिसे इन्द्र ने परशुराम को दिया था। उस धनुष के ही द्वारा परशुराम ने इक्कीस बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य कर दिया था।......लेकिन अर्जुन एक बात में मुझसे बढ़कर है। उसके सारथि श्रीकृष्ण हैं, जिनकी टक्कर का आदमी मिलना कठिन है। आप जानते हैं कि सारथि की कुशलता पर ही किसी युद्ध का फलाफल निर्भर करता है। मैं कल बिजली की तेजी से युद्ध करूँगा। मुझे श्रीकृष्ण के समान सारथि चाहिये।

दुर्योधन : अपनी सेना का कौन-सा व्यक्ति तुम्हारे मन के योग्य सारथि बन सकता है ?

कर्ण : एक व्यक्ति अपनी सेना में है जो अश्वविद्या का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंडित है। वह रणविद्या के साथ-साथ सारथ्य का कार्य भी अच्छी तरह जानता है।

दुर्योधन : कौन है वह व्यक्ति?

कर्ण : मद्रराज शल्य।

दुर्योधन : शल्य? लेकिन शल्य बड़े क्रोधी स्वभाव के राजा हैं। वे नकुल ओर सहदेव की जननी माद्री के भाई हैं। अपनी सेना के साथ वे पाण्डवों को सहायता देने के लिए चले थे। पर मैंने छल से उन्हें अपनी ओर कर लिया हैं। लड़ते हैं वे कौरवों की ओर से, पर उनका मन है पाण्डवों की ओर। सम्भव है, सारथ्य ग्रहण करने में वे अपना अपमान समझें।

कर्ण : तब फिर कल के युद्ध का संचालन ठीक तरह से न हो पायेगा। श्रीकृष्ण की टक्कर का सारथि मद्रराज शल्य के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

दुर्योधन : कर्ण, तुम्हारे पास इन्द्र की दी हुई "अमोघ शक्ति" है। उसका वार तो अर्जुन भी नहीं संभाल सकता। कल अर्जुन का मरण निश्चित है। शल्य को सारथी के रूप में पाने की आशा छोड़ दो।

कर्ण : आप भूल रहे हैं कुरुराज। इन्द्र की दी "अमोघ शक्ति" मैं अपने प्राण की तरह संजोग कर रखे हुए था। रोज उस शक्ति की पूजा करता था। वह शक्ति एक ही व्यक्ति के मारने के काम में आ सकती थी। मैंने उसको अर्जुन के लिए ही रख छोड़ा था।

दुर्योधन : याद आया, उस रोज भीम के मायावी पुत्र घटोत्कच ने जब समस्त कौरव सेना को तहस-नहस कर डाला। जब वह आधी रात तक आकाश-पथ से आसुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल से लड़ता रहा तो मैंने ही तुमसे आग्रह किया था कि किसी तरह उस राक्षस का नाश किया जाये। तुमने लाचार होकर "अमोघ शक्ति" का प्रयोग किया था।

कर्ण : घटोत्कच तो तत्क्षण मर गया। पर वह शक्ति इन्द्र के पास लौट गई। यदि आज "अमोघ शक्ति मेरे पास रहती तो सारथी की चिंता मैं करता ही नहीं।

दुर्योधन : अच्छी बात है। मैं मद्रराज शल्य से निवेदन करूँगा। लो, सामने से वही तो आ रहे हैं।

(मद्रराज शल्य का प्रवेश)

शल्य : दुर्योधन! पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण तो अब कौरव सेना में रहे नहीं। कल के युद्ध का सेनापति कौन होगा ?

दुर्योधन : मद्रराज, कल के युद्ध के लिये मैं अंगराज कर्ण को सेनापति नियुक्त कर चुका हूँ। लेकिन एक वाधा है।

शल्य : वाधा कैसी।

दुर्योधन : अङ्गराज कर्ण को श्रीकृष्ण की टक्कर का एक सारथि चाहिए। अश्वविद्या में आप निपुण हैं। यदि आप कर्ण का सारथ्य ग्रहण करें तो—

शल्य : (एकाएक बंकिम भृकुटि, बात्त काटते हुए) सावधान दुर्योधन ! तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

दुर्योधन : नहीं मद्रराज, मैं आपकी शूरता को जानता हूँ। आप शत्रुओं के लिए काँटे की तरह प्रखर हैं, इसी से आपका नाम "शल्य" है।

शल्य : जब तुम मेरे वीरता से परिचित हो तो मुझे सेनापति का पद न देकर तुमने सारथि का पद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों दिया ? क्या भूल गये कि तुमने धोखे से मुझे वचनवद्ध कराकर पांडवों के ऊपर मुझसे आक्रमण कराया। मैं यदि जानता कि मेरी शूरता का तुमसे ऐसा पुरस्कार मिलेगा तो कभी कौरवपक्ष में न आता।

दुर्योधन : मद्रराज, परिस्थिति मेरे प्रतिकूल है। पितामह भीष्म के पतन और आचार्य द्रोण के मरण से मैं घोर चिन्ता में पड़ गया हूँ। कर्ण को मैंने सेनापति नियुक्त कर दिया है। आप अश्वविद्या में प्रवीण हैं। इसी से मैंने वैसा प्रस्ताव किया। मेरी धृष्टता को क्षमा करें और सारथ्य ग्रहण करने की स्वीकृति दें।

शल्य : कर्ण अधिरथ सारथी का पुत्र है। रथ हाँकना इनका जन्मजात पेशा है। मैं क्षत्रिय हूँ। युद्ध करना मेरा पेशा है। कल्याण इसमें है कि तुम मुझे सेनापति बनाओ और कर्ण को मेरा सारथि नियुक्त करो।

कर्ण : मद्रराज, आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

शल्य : और तुम क्षत्रिय जाति का अपमान कर रहे हो। रथ हाँकना तुम्हारा काम है, मेरा नहीं।

कर्ण : मद्रराज, आप अपनी सीमा से बाहर जा रहे हैं। जिह्वा संयत कीजिये।

शल्य : सूतपूत्र, तुमने क्षत्रिय का क्रोध अभी देखा नहीं है। शल्य से तुम्हारी भेंट हुई नहीं है। यदि तुम्हें अपने पुरुषार्थ पर घमण्ड है तो आओ, पहले मुझसे युद्ध करो—अभी, इसी कौरव-शिविर में, कुरुराज दुर्योधन के सामने अभी निर्णय हो जाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि सेनापति बनने की योग्यता कौन रखता है— मद्रराज, शल्य या सूतपूत्र कर्ण ?

कर्ण : कुरुराज, शल्य को मेरे शिविर से बाहर जाने का आदेश दीजिए, अन्यथा अर्जुन के पहले मुझे शल्य के रुधिर से हाथ रंगना पड़ेगा।

दुर्योधन : कर्ण, शान्त। मद्रराज, क्रोध न कीजिए। शिविर में अपने ही व्यक्ति से युद्ध करना उचित नहीं, इससे अपनी शक्ति का क्षय होगा।

शल्य : दुर्योधन, कर्ण को आदेश दो कि वह मुझसे अविलम्ब क्षमा-याचना करे।

कर्ण : कर्ण की जिह्वा तुमसे क्षमा-याचना नहीं करेगी शल्य।

शल्य : कुरुराज !

दुर्योधन : कर्ण की ओर से मैं आपसे क्षमा याचना करता हूँ। महाराज। अपने क्रोध का दमन कीजिए।

शल्य : कर्ण, अब कर्णार्जुन युद्ध का समय नहीं आयेगा। तुमने सोये शेर को छेड़ा है। मैं आज ही तुम्हारा बध करके पांडवों के भय को सदा के लिए मिटा देता हूँ। कुरुराज तुम दूर हट जाओ। कर्ण, तलवार निकालो (अपनी तलवार निकालते हैं)

दुर्योधन : (शल्य के सामने घुटने टेक कर) मद्रराज, नतजानु होकर कुरुराज दुर्योधन आपसे क्षमा याचना करता है। आप मेरे पूज्य हैं। कर्ण आपके ऊपर खंग नहीं उठा सकता ! आज मैं हृदय में निराशा को लिए, आपसे सहायता की भिक्षा मांग रहा हूँ। आपके "ना" कहने से मेरा यज्ञ अधूरा रह जायेगा। मेरे लिए आप सब कुछ भूल जायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शल्य : (तलवार म्यान में रखते हुए) उठो दुर्योधन, तुम्हारी नम्रता ने मुझे बार-बार जीता है। लेकिन अब मैं इस युद्ध से ऊब गया हूँ। मुझे अपनी सेना के साथ मद्रदेश लौटने की अनुमति दो। मैं कल ही कुरुक्षेत्र की रणभूमि से दूर चला जाना चाहता हूँ। डरो मत, मैं पांडवों का पक्ष भी अब ग्रहण न करूँगा।

दुर्योधन : मद्रराज, आपको मैं लौटने न दूँगा। आपकी राह में मैं अपने शरीर को डाल दूँगा। जय हो या पराजय—इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। लेकिन आप लोगों के साहस पर ही मैं लड़ा हूँ। यदि आप चले जायेंगे तो मैं पंगु बन जाऊँगा।

शल्य : अच्छी बात है मैं तुम पर बहुत ही प्रसन्न हूँ। तुमने बार-बार मुझे प्रसन्न करके मेरे मन के विरुद्ध कार्य कराया है। बताओ तुम क्या चाहते हो?

दुर्योधन : आप सारथि के रूप में श्रीकृष्ण के समान होंगे। आप कर्ण का सारथ्य ग्रहण करें, ताकि उसको कल के युद्ध में बिजली की गति मिले।

शल्य : तुम्हारी प्रार्थना मैं स्वीकार करता हूँ दुर्योधन। यह ठीक है कि मैं अश्वविद्या में निपुण हूँ। यह भी है कि सारथ्य-कार्य करने में इस पृथ्वी पर श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई व्यक्ति मेरी समता नहीं कर सकता। मैं कल के युद्ध में कर्ण का सारथि बनूँगा। पर मेरी एक शर्त है।

दुर्योधन : कौन सी?

शल्य : कर्ण सूतपुत्र है और मैं क्षत्रिय हूँ। मैं कर्ण की लम्बी-लम्बी बातों को बर्दाश्त न कर सकूँगा। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो भी बोलूँ, कर्ण उत्तर न दे। इसी शर्त पर मैं उसका सारथ्य ग्रहण करूँगा।

दुर्योधन : स्वीकार है मद्रराज।

शल्य : तुम्हारे मुख से नहीं, कर्ण के मुख से इसकी स्वीकृति चाहिए। कर्ण सोच कर स्वीकृति दो।

कर्ण : मैंने अच्छी तरह सोच लिया है। आप रणभूमि में जो भी बोलेंगे, मैं बुरा न मानूँगा। मेरा उद्देश्य है अर्जुन का बध करना। अर्जुन का बध मैं तभी कर सकता हूँ, जब आप सारथि बनेंगे।

शल्य : अच्छी बात है। कल संसार कर्णार्जुन-युद्ध को देखेगा। जाओ कुरुराज, अब प्रभात-काल में मुझे सारथि के रूप में कर्ण के रथ पर पाओगे। जाओ कर्ण, तुम भी आराम करो।

*

द्वितीय दृश्य

स्थान—रणभूमि। समय—अपराह्ण

(दो रथों पर सवार कर्ण और अर्जुन बाण-युद्ध में व्यस्त है। कर्ण के रथ के सारथि मद्रराज शल्य हैं। अर्जुन के रथ के सारथि श्रीकृष्ण हैं। कर्ण और अर्जुन रक्ताक्त हैं। रण के बाजे बज रहे हैं। नेपथ्य में कोलाहल, हथियारों की झनकार, चीत्कार आदि कर्ण के रथ का एक पहिया पृथ्वी में धँसा है।)

शल्य : कर्ण, तुम्हारे रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया है। उसे निकाल कर युद्ध करो। रथ की गति रुक गई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण : मद्रराज, मैं अर्जुन के साथ युद्ध में उलझा हूँ। आप पहिया बाहर निकाल दें।

शल्य : मद्रराज शल्य सूतपुत्र का दास नहीं है कर्ण।

कर्ण : मद्रराज, मेरी सहायता कीजिये। मैं अभी युद्ध में उलझा हूँ।

शल्य : तो फिर तुम्हारा रथ रुका रहेगा। मैं पहिये को बाहर न निकालूँगा।

अर्जुन : कर्ण, आज ही तो कर्णार्जुन-युद्ध है। संसार इस युद्ध की प्रतीक्षा बहुत दिनों से कर रहा था। रंग-भूमि में मैंने प्रथम बार तुम्हें देखा था। बड़ी इच्छा थी कि एक बार तुमसे युद्ध करूँ। आज वह साध पूरी हुई।

कर्ण : अर्जुन, मैंने भी तुम्हारी वीरता की कहानियाँ सुनी हैं। भीष्म और द्रोण तुम्हारी बहुत ही प्रशंसा करते थे। एक दो बार मुझे तुमसे युद्ध करने का मौका मिला। पर मन न भरा। आज ही हम दोनों जी भर कर अपने विक्रम को तौल लें। खांडव वन में अग्निदेव ने तुम्हें गांडीव धनुष, अनुपम रथ, कभी न खाली होनेवाले तरकश और बहुत से दिव्यास्त्र दिये थे। तुमसे एक बार देवादिदेव महादेव से भी युद्ध करके इन्हें पाशुपति अस्त्र देने को बाध्य किया था। ऐसे वीर से लड़ने की मेरी बहुत उत्कंठा थी। आज ही युद्ध में मेरी इच्छा पूरी हुई है।

अर्जुन : परशुराम के दिये हुए तुम्हारे धनुष में विचित्र शक्ति है कर्ण।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण : अर्जुन, यह सब क्या हो रहा है ? भूलो मत की यह रण-भूमि है, और तुम धर्मराज युधिष्ठिर के सामने कर्ण-वध की प्रतिज्ञा करके आये हो। यदि कर्ण के यश की गाथा ही को गाना था तो फिर प्रतिज्ञा न करते।

अर्जुन : केशव, आपने ठीक स्मरण दिलाया। धर्मराज के सामने मैंने आज ही कर्ण-वध की प्रतिज्ञा की है। लेकिन कर्ण के महान् पुरुषार्थ के आगे मेरा सिर झुक जाता है।

कृष्ण : युद्धक्षेत्र में ऐसी भावना अशुभ होती है अर्जुन। तुम्हारी दुर्बलता से शत्रु को नया बल मिलेगा। कर्म ही तुम्हारा प्रधान लक्ष्य होना चाहिए। गीता के उपदेशों को फिर दुहराना पड़ेगा क्या ?

अर्जुन : नहीं माधव, क्षमा कीजिये। मेरी चेतना जाग उठी है। आदेश दीजिये, क्या करना होगा ?

कृष्ण : शीघ्र कर्ण का वध कर डालो।

कर्ण : अर्जुन, ठहरो। जरा मेरे रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया है। मुझे निकालने का अवसर दो। (रथ पर से कूदते हैं)

कृष्ण : अर्जुन, रुकने का समय नहीं है। बाण मारते जाओ।

अर्जुन : मेरे हाथ काँपने लगे घनश्याम।

कृष्ण : अर्जुन, आकाश में इस विचित्र युद्ध को देखने के लिए महादेव, इन्द्र आदि देवगण खड़े हैं। तुम्हारे बड़े भाई युधिष्ठिर भी शिविर से रणभूमि में आकर, एक ओर खड़े होकर, इस युद्ध को देख रहे हैं। (फिर कहता हूँ, बाण मारते जाओ। (अर्जुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाण मारते जाते हैं। कर्ण रथ का पहिया पूरी शक्ति लगाने पर भी निकाल नहीं पाते हैं।)

कर्ण : अर्जुन तुमने वेदों का अध्ययन किया है। तुम रणनीति को जानते हो। मैं इस समय पृथ्वी पर असहाय, निरस्त्र, अकेला, खड़ा हूँ। मुझ पर बाण चलाकर वीर धर्म को कलंकित न करो। रथ का पहिया पृथ्वी से निकलने दो। तुम वीर हो। धर्म को जानते हो।

कृष्ण (कर्ण, आज धर्म का नाम लेते तुम्हें पश्चाताप क्यों नहीं होता? जब तेरह वर्ष वनों में बिताने के बाद भी तुम लोगों ने पांडवों को राज्य वापस नहीं किया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ था? भरी सभा में जब द्रौपदी तुमसे अपनी लाज-रक्षा की भीख रो-रोकर माँग रही थी, उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ था? अकेले बालक अभिमन्यु को जब सात-सात महारथियों ने चक्रव्यूह के घेरे में निर्दयता से मारा था, उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ था? तुम्हारे सामने जूए में शकुनि ने छल पूर्वक जब पासों से पांडवों की सत्ता का हरण किया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ था? आज कुरुक्षेत्र की इस विस्तृत संग्रामभूमि में धर्म की दुहाई क्यों देते हो? यदि धर्म को तुम और दुर्योधन मानते तो ये अनगिनत वीर इस तरह क्यों काटे जाते? (अर्जुन, कर्ण की प्रार्थना व्यर्थ है। बाण मारते जाओ।)

कर्ण : (आर्त स्वर) अर्जुन!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण : कर्ण के स्वर पर ध्यान न दो धनञ्जय। कर्त्तव्य की पुकार है, कर्ण का शीघ्र वधकरो।

अर्जुन : जो आज्ञा भगवान्। (बाण-वर्षा)

कर्ण : अर्जुन, सावधान! तुमने अपनी वीरता पर कलंक लगाया है। मैं ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता हूँ। बचो। (एक वाण निकाल कर पढ़ने लगते हैं। पर मन्त्र भूल जाते हैं। व्यग्र भाव।)

कर्ण : यह क्या? मैं इस मन्त्र को भूल गया?—ओह, यह परशुराम के अभिशाप का प्रभाव तो नहीं है? सच है, मेरे रथ का पहिया पृथ्वी में धँस चुका, मैं परशुराम की दी गई विद्या को भी भूल गया। जान पड़ता है मेरा मरण-काल आ गया।

कृष्ण : अर्जुन, अपने दिव्यास्त्र का प्रयोग करो। वार खाली न जाये। शीघ्र करो।

अर्जुन : (एक चमकते वाण को निकाल कर अभिमन्त्रित करके) कर्ण, यह "आंजलिक" बाण है। इसका लक्ष्य कभी नहीं चूकता। यह इन्द्र के वज्र और यम-राज के दण्ड के समान भयंकर है। मरने के लिए तैयार हो जाओ।

कर्ण : अर्जुन! (इतने में बाण लगता है कर्ण धराशायी होते हैं।)

कर्ण : आह, अर्जुन! कर्णार्जुन—युद्ध में विजय तुम्हारी हुई। लेकिन, शुरू से भाग्य मुझे धोखा देता रहा। परशुराम का अभिशाप! इन्द्र का छल! कुन्ती! नहीं, ओह! भगवान कृष्ण, क्षमा कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शल्य, दुर्योधन को सूचित कर दीजिये कि मैं प्राण देकर उनके ऋण को चुका रहा हूँ। भगवान सूर्य! क्षमा! (मृत्यु)

कृष्ण : शंखनाद करो अर्जुन। कर्ण ने कुसंगति में पड़कर अनेक पाप किये, लेकिन वह दानवीर था। कर्ण-वध का महत्व वृत्रासुर-वध की तरह है! महाभारत के कर्ण-पर्व के पाठ का बहुत बड़ा पुण्य होगा, ऐसी मेरी भविष्यवाणी है। पांचजन्य शंख के घोष से सेना में अपनी विजय की सूचना दे दो। (शंखनाद)

— यवनिका पतन —

*

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक ...0279...
दिनांक ...27/5...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
क्रमांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri